राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

RNI.No. UPHIN/2012/43078

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करे
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | 9511151254 | epaper.swatantraprabhat.com | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ,गुरुवार , 27 मार्च 2025

वर्ष 13, अंक 330, पृष्ट 04,मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

पीड़ित परिवार से मिले बीकेटी विधायक की आर्थिक सहायता ...03

कुख्यात ऑटो-लिफ्टिंग गिरोह का भंडाफोड़ किया...04

जस्टिस वर्मा के इलाहाबाद हाईकोर्ट ट्रांसफर के विरोध में अनिश्चितकालीन हड़ताल पर गए वकील

जेपी सिंह।

ब्यूरो प्रयागराज।सरकारी आवास से बेहिसाब नकदी मिलने के बाद जांच का सामना कर रहे दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायाधीश यशवंत वर्मा को लेकर विवाद बढ़ गया है. यशवंत वर्मा से न्यायिक कार्य वापस लेने के साथ ही साथ उनको इलाहाबाद हाईकोर्ट (मूल न्यायालय) फिर से वापस भेजने का आदेश दिया गया है.इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम के इस फैसले के विरोध में अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा कर दी है. इसके तहत मंगलवार से हाईकोर्ट के वकील अनिश्चिकालीन हड़ताल पर चले गए हैं। बार एसोसिएशन ने सोमवार को बुलाई गई आपातकालीन आम सभा में यह 11 बिंदुओं पर प्रस्ताव पास किया था. इसमें जस्टिस यशवंत वर्मा पर महाभियोग चलाए जाने, सीबीआई व ईडी जैसी जांच एजेंसियों से एफआईआर दर्ज कर जांच कराने जैसी मांगें शामिल हैं। चीफ जस्टिस संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाले सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम ने सोमवार को जस्टिस वर्मा को इलाहाबाद हाईकोर्ट वापस भेजने के अपने निर्णय की पोस्ट की। शाम को सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड किए गए प्रस्ताव में जस्टिस वर्मा को वापस भेजने को लेकर के केंद्र सरकार से की गई सिफारिश सार्वजनिक कर दी गई.प्रस्ताव में कहा गया कि सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम ने 20 मार्च 2024 को आयोजित बैठक में दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा को इलाहाबाद हाईकोर्ट में वापस भेजने की सिफारिश की है। इसमें सबसे जस्टिस यशवंत वर्मा पर महाभियोग चलाए जाने, उनके खिलाफ लगे आरोपों की ईडी-सीबीआई द्वारा एफआई आर दर्ज कर जांच कराने की मांग शामिल थी। शाम को जैसे ही सुप्रीम कोर्ट कोजेजियम ने फिर से दिल्ली उच्च न्यायालय के जज यशवंत वर्मा का तबादला इलाहाबाद हाईकोर्ट करने की सिफारिश की बार एसोसिएशन के अध्यक्ष ने अपने आवास पर ही मीटिंग बुला ली.इस मीटिंग के बाद जस्टिस यशवंत वर्मा के इलाहाबाद हाईकोर्ट भेजे जाने के खिलाफ अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा कर दी. इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के आह्वान पर अधिवक्ता न्यायिक कार्य से विरत हैं। हाईकोर्ट बार के पदाधिकारियों का कहना है कि जस्टिस वर्मा को वह यहां कतई कार्यभार नहीं ग्रहण करने देंगे. अध्यक्ष अनिल तिवारी का कहना है कि इस मुद्दे को लेकर आर-पार की लड़ाई का ऐलान करेंगे. पूर्ण रूप से हड़ताल पर रहने के अलावा सड़कों पर भी आंदोलन करेंगे.

हाईकोर्ट बार ने आम सभा में पास किए 11 प्रस्ताव

बार एसोसिएशन जस्टिस यशवंत वर्मा के इलाहाबाद हाईकोर्ट या इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच या किसी अन्य हाईकोर्ट में ट्रांसफर का विरोध करता है। मुख्य न्यायाधीश को सीबीआई, ईडी व अन्य जांच एजेंसियों द्वारा एफआईआर दर्ज करने और केस की निष्पक्ष जांच की तुरंत अनुमति देनी चाहिए। जांच एजेंसियों को न्यायाधीश यशवंत वर्मा को यदि आवश्यक हो तो मुख्य न्यायाधीश की पूर्व अनुमति से उन्हें पूछताछ के लिए हिरासत में लिया जाना चाहिए. मुख्य न्यायाधीश को तुरंत सरकार से न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के खिलाफ महाभियोग चलाने की सिफारिश करनी चाहिए. भारत के राष्ट्रपति और सरकार को महाभियोग की कार्यवाही में नागरिक समाज के सदस्यों को शामिल करके प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने के लिए तुरंत उपयुक्त कदम उठाने चाहिए. कॉलेजियम के माध्यम से न्यायाधीशों की नियुक्ति की प्रक्रिया पारदर्शी होनी चाहिए. न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय और दिल्ली उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान दिए गए सभी निर्णयों की समीक्षा की जानी चाहिए, ताकि न्यायिक प्रणाली में ÷सार्वजनिक विश्वास÷ को पुनः प्राप्त करने के लिए बड़े पैमाने पर लोगों का विश्वास जगाया जा सके. इलाहाबाद उच्च न्यायालय में रिक्त पदों को यथाशीघ्र भरा जाए, क्योंकि हम न्यायाधीशों की कमी से जूझ रहे हैं और इस कारण से न्याय में देरी हो रही है तथा जनता का विश्वास प्रभावित हो रहा है. बार एसोसिएशन ने कहा कि अंकल जज सिंड्रोम के खिलाफ एक प्रस्ताव होना चाहिए और सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम से अनुरोध है कि वह इस संबंध में तत्काल सुधार करे. महासभा में यह भी संकल्प लिया गया कि इस प्रस्ताव की एक प्रति सरकार के साथ-साथ देश के सभी बार एसोसिएशनों को भेजी जाए, ताकि पूरे देश को भारत के लोगों की दुर्दशा के बारे में पता चले. बार एसोसिएशन ने सभी विधिक समुदाय से अनुरोध किया है कि न्यायिक प्रणाली में पारदर्शिता के लिए आवाज उठाएं, ताकि संविधान के मूल ढांचे अर्थात न्यायपालिका की शक्ति मानव जीवन के सभी पहलुओं पर लागू हो तथा न्यायिक प्रणाली में भ्रष्टाचार समाप्त हो. बार एसोसिएशन को हमारे उद्देश्य के समर्थन में बड़ी संख्या में ईमेल और व्हाट्सएप संदेश प्राप्त हुए हैं. यहां यह उल्लेख करना भी महत्वपूर्ण है कि ये ईमेल और संदेश केवल वकीलों से ही नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों से हैं, जिससे एसोसिएशन में यह विश्वास और भी बढ़ गया है कि हम सही उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं. इस प्रस्ताव को उन सभी तक पहुंचाया जाना चाहिए, ताकि वे हमारे आंदोलन में शामिल हो सकें।

वाराणसी के वकील भी विरोध में उतरे

दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के घर अकूत संपत्ति मिलने का मामला अब तूल पकड़ने लगा है. आग बुझाने के बाद फायर फाइटिंग टीम को भारी मात्रा में जले हुए नकदी रुपए मिले थे. इसके बाद उनका ट्रांसफर यूपी के इलाहाबाद हाईकोर्ट में कर दिया गया. जिसको लेकर अधिवक्ताओं में काफी रोष देखने को मिल रहा है। इलाहाबाद हाईकोर्ट के अधिवक्ताओं के विरोध के बाद मंगलवार को वाराणसी के अधिवक्ताओं ने झाड़ू लगाकर न्यायपालिका में भ्रष्टाचार के विरोध सफाई अभियान चलाकर प्रदर्शन किया. वाराणसी के अधिवक्ताओं का कहना है कि न्यायपालिका में गरीब एवं पीड़ित लोग इंसाफ पाने के लिए गुहार लगाते हैं. जबकि, यहां पर्याप्त भ्रष्टाचार व्याप्त है। जस्टिस वर्मा के खिलाफ झाड़ू लगाकर विरोध प्रदर्शन किया गया है।

महाकुंभ भगदड़ पर अजय राय बोले- अब तक मृतकों और लापता लोगों की सूची क्यों नहीं दे पायी सरकार

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने महाकुंभ के दौरान हुई भगदड़ में मारे गए लोगों की सूची नहीं जारी करने को लेकर योगी सरकार पर राजनीतिक हमला बोला है. उन्होंने कहा कि महाकुंभ में हुए भगदड़ को करीब 2 महीने का समय बीत चुका है, पर सरकार अभी तक उस घटना में मारे गए मृतकों की सूची तक नहीं बन पाई है. यहां तक की महाकुंभ में लापता हुए लोगों की भी सूची अभी तक सरकार नहीं जारी कर पाई है. उन्होंने भगदड़ में मारे गए लोगों को मुआवजा देने में हो रही देरी को लेकर भी सरकार को घेरा है. उन्होंने कहा कि क्या सरकार किसी ने घोटाले का इंतजार कर रही है. इसके बाद मृतकों को मुआवजा दिया जाए. वह मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस कार्यालय पर महाकुंभ से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दे पर प्रेस से बातचीत कर रहे थे। मृतकों का आंकड़ा छिपाने के लिए सरकार उन्हें जबरदस्ती चुप कर रही है ¯ अजय राय ने कहा कि बदहाली और अव्यवस्था का शिकार हुए कुंभ में मौनी अमावस्या के दिन हुई भगदड़ से सैकड़ों लोगों की दर्दनाक मौत हो गई. एवं हजारों लोग लापता हो गये. सरकार ने यह स्वीकार करने में पूरे 24 घंटे लगा दिये कि वहां पर कोई मौत भी हुई थी. सोशल मीडिया पर सामने आयी तस्वीरों और वीडियो के कारण एवं कांग्रेस पार्टी द्वारा इस मुद्दे को गंभीरता से उठाये जाने के कारण सरकार को मजबूरन 30 लोगों की मृत्यु स्वीकार करनी पड़ी। अजय राय ने कहा कि जबकि सच यह था कि मृतकों की संख्या उससे कहीं ज्यादा थी। अपने झूठ को छिपाने के लिए सरकार नियम विरुद्ध रास्ते अपनाकर मृतकों के आश्रितों को चुप कराने की कोशिश कर रही है. मृत्यु प्रमाण पत्र जारी किये बगैर पुलिस द्वारा नकद पैसा भिजवा कर अपनी करतूत पर पर्दा डालने की कोशिश कर रही है.

अजय राय ने कहा कि झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले के मुसाबनी के सुंदर नगर के रहने वाले शिवराज गुप्ता की भी मृत्यु प्रयागराज कुंभ में मौनी अमावस्या के दिन हुई थी. उनका नाम मृतकों की सूची में नहीं था और ना ही प्रदेश सरकार ने उनका मृत्यु प्रमाण पत्र जारी किया है. उत्तर प्रदेश पुलिस उनके आश्रितों को 5 लाख रुपये का नकद मुआवजा देने उनके आवास पर पहुंची.इसके अलावा जब इनके पुत्र शिवम ने 5 लाख रुपये लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि मुआवजा तो 25 लाख रुपये घोषित था और नकदी में बिना कागजी प्रक्रिया पूरी किये यह मुआवजा क्यों दिया जा रहा है? जबकि झारखण्ड के स्थानीय अधिकारियों द्वारा ऐसी किसी भी कार्यवाही से अनभिज्ञता जताई है। अजय राय ने बताया कि ऐसा जानकारी में आया है कि बंगाल के दो परिवारों को 5- 5 लाख रुपये नकद दिये गये हैं. वहां भी स्थानीय अधिकारियों द्वारा इस संबंध में अनभिज्ञता जताई गई है. उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश शासन द्वारा अपनाई गई इस प्रक्रिया से संदेह पैदा होता है और कई गंभीर सवाल उठते हैं. उन्होंने कहा कि यह कार्यवाही छिपा कर क्यों की जा रही है? घटना को लगभग 2 महीने के करीब बीत चुके हैं, लेकिन अभी तक न मृतकों की सही सूची और न ही लापता लोगों की सूची प्रदेश सरकार द्वारा जारी की गई है। बिना दूसरे राज्य की सरकार को विश्वास में लिए पुलिस द्वारा नकद पैसा भेज कर क्या छिपाने की कोशिश कर रही है योगी सरकार? नकद में कम मुआवजा देकर क्या कोई नया घोटाला कर रही प्रदेश सरकार? और सभी नियम कानून ताक पर रखकर एक गैंग बनाकर काम कर रही है योगी सरकार. अजय राय ने प्रदेश सरकार से मांग करते हुए कहा कि सरकार अब कम से कम अब उन मृतकों की सूची ही जारी कर दे, जिनके परिजनों को वह नकद पैसा भिजवा रही है।

संक्षिप्त ख़बरें

हण्डिया पुलिस द्वारा 05 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना हण्डिया पर पंजीकृत मु0अ0सं0-155/2025 धारा-

191(2)115(2)352/119/308(6)333/324(4)भा0न्या0सं0 से संबंधित 05 वांछित अभियुक्त/अभियुक्ता 1. सुकूरु पुत्र स्वजगाराम उर्फ टिरु 2. रामचन्द्र पुत्र स्व0 जगाराम टिरु 3. राकेश कुमार पुत्र स्व0 बुदुल प्रसाद 4. उर्मिला देवी पत्नी सुकुरू 5. नेहा पुत्री सुकूरु निवासीगण ग्राम पूरेमथुरादास थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना हण्डिया पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक-25.03.2025 को थाना हण्डिया क्षेत्रान्तर्गत ग्राम पूरेमथुरादास के पास से गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी

खरगूपुर थाना क्षेत्र का युवक हुआ भारतीय सेना में चयनित क्षेत्र में खुशी का माहौल लोगों ने दी बधाई

गोंडा। गरीब परिवार से निकलकर देश के सुरक्षा के लिए पहली बार में चयनित होने से क्षेत्र में खुशी। विकासखंड रुपईडीह के ग्राम पंचायत तेंदुआ चौखड़िया के निवासी राहुल पुत्र रामसखर के भारतीय सेना में चयनित होने पर क्षेत्र में खुशी की माहौल है राहुल बचपन से ही बहुत होनहार कुशल

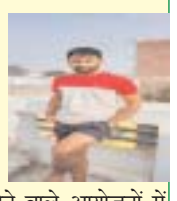

वक्त एवं क्षेत्र में होने वाले आयोजनों में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ बहुत ही होनहार थे राहुल ने कहा कि भारतीय सेवा में चयनित होने से गर्भ महसूस कर रहा हूं। जिसका पूरा श्रेय माता-पिता बड़े भैय्या राधेश्याम एवं गुरुजनों का रहा प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर तथा उच्च शिक्षा कस्बा के श्री गांधी आदर्श विद्यालय इंटर कालेज खरगूपुर से ग्रहन किया। भारतीय सेवा में चयन होने से क्षेत्र के पूर्व प्रधान श्रीकांत तिवारी अमरनाथ तिवारी, प्रधान दिनेश कुमार , पूर्व जिला पंचायत गुदगुद मिश्रा,विक्कू मिश्रा आदि लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त किया है।

खुल्दाबाद लूकरगंज हिम्मतगज आदर्श व्यापार मंडल द्वारा लूकरगंज में होली मिलन समारोह एवं शपथग्रहण समारोह का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। खुल्दाबाद लूकरगंज हिम्मतगज आदर्श व्यापार मंडल सम्बन्ध उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार के तत्वावधान में आज अंबर गेस्ट हाउस लूकरगंज में आयोजित होली मिलन समारोह एवं शपथग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी,एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित महानगर अध्यक्ष संजय गुप्ता का व्यापारियों ने स्वागत एवं अभिनन्दन किया । उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी ने व्यापारियों को होली की शुभकामनाएं एवं बधाई दिया और व्यापारियों को बताया की उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सिंह ने व्यापारियों के लिए मुद्रा लोन की योजना की शुरुवात किया है इसके पर्यटन विभाग में भी व्यापारियों की कई योजनाएं की घोषणा किया गया है व्यापारी इसका सीधा लाभ लेकर अपने व्यापार और आगे बड़ा सकते जिसकी जानकारी व्यापारी आनलाइन आवेदन कर सकते हैं कोई दिकत होने पर मुझे भी बता सकते हैं मैं उसका पूरा सहयोग करूंगा। कार्यक्रम में 31 व्यापारियों ने अपने पद की शपथ लिया और व्यापारियों की सेवा करने की भी शपथ लिया खुल्दाबाद, लूकरगंज, हिम्मतगज आदर्श व्यापार मंडल का अध्यक्ष अमन केसरवानी, वरिष्ठ महामंत्री डाक्टर रोबिन साहू, महामंत्री विष्णु केसरवानी, कोषाध्यक्ष सुनील केसरवानी, युवा व्यापार मंडल महानगर अभिषेक ओझा, जिला उपाध्यक्ष विजय सिंह, जिला संगठन मंत्री नितिन चौरसिया की घोषणा किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता महानगर अध्यक्ष नीरज जायसवाल ने किया और मंडल प्रभारी जिलाध्यक्ष प्रयागराज व्यापारी रमेश केसरवानी ने सभी पघाकरियो को सदस्यता दिला कर शपथ दिलाई महिला अध्यक्ष स्वाति निरखी ने नगर निगम उपाध्यक्ष सुनीता दरबारी जी का और महिला आयोग सदस्य गीता विश्वकर्मा जी का स्वागत एवं अभिनंदन किया कार्यक्रम मैं पार्षद पंकज जयसवाल ने रवि केसरवानी और सभी व्यापारी भाइयों का होली की बधाई दी सभी व्यापारी बंधुओ ने मिलकर होली खेली और सभी को होली की बधाई दी कार्यक्रम में प्रमुख रूप से पार्षद नगर निगम उपाध्यक्ष सुनीता दरबारी, गीता विश्वकर्मा सदस्य राज्य महिला आयोग,रवि केसरवानी,पंकज जायसवाल, प्रबुद्ध मानस, देवेन्द्र सिंह, कैनहया लाल राहचादनी,पवन श्रीवास्तव,ने अपने विचार रखे और होली की बधाई दिया

फूलपुर तहसील अधिवक्ता संघ के निर्वाचित पदाधिकारी ने ली शपथ

समारोह में भारी संख्या में अधिवक्ता रहे मौजूद

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। काफी रस्साकशी और गम गामी के बच फूलपुर तहसील अधिवक्ता संघ का चनाव होने के बाद आज नई कार्यकारिणी ने एक समारोह में पद और कर्तव्य का शपथ लिया। शपथ समारोह में नव निर्वाचित अध्यक्ष धर्मराज यादव वरिष्ठ उपाध्यक्ष हृदय नारायण सिंह महामंत्री इंजीत मौर्य कनिष्ठ उपाध्यक्ष कमल कुमार पटेल राधारमण यादव मो शारिब तथा महेश सोनकर कोषाध्यक्ष तीर्थ राज यादव संयुक्त मंत्री वीरेंद्र प्रताप यादव विनोद कुमार यदव संदीपकुमार श्रीवास्तव तथा बृजेश कुमार कनौजिया ने शपथ ली। शपथ लेने के बाद अध्यक्ष धर्मराज यादव ने कहा यह चुनाव जनमत का चुनाव था इसीलिए सभी पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित हुए है।मै जनमत के विरुद्ध एक भी ऐसा कोई कार्य करूंगा जिसमें वकीलों का सम्मान गिरे।साथ ही जो न्याय के लिए जनता आती है उसके साथ भी न्याय जल्द हो पूरा प्रयास का करूंगा।

खबर का असर ..... राजस्व लेखपाल और कानूनगो के साथ सांठगांठ कर भूमाफियाओं ने सरकारी बंजर भूमि पर पुनः बना दिया था रास्ता

बीकेटी तहसील के भौली गांव में गरजा बाबा का बुलडोजर खाली कराई करोंड़ों रुपए की सरकारी बंजर भूमि

..... दैनिक समाचार पत्र स्वतंत्र प्रभात की खबर का हुआ बड़ा असर । ..... बीकेटी तहसील क्षेत्र के गांव भौली में भूमाफियाओं ने सरकारी बंजर भूमि पर किया था अवैध कब्जा । ..... बीकेटी तहसील के गांव भौली में इससे पहले भी बुलडोजर के तहत हुई थी कार्यवाही ।

स्वतंत्र प्रभात
विनीत कुमार मिश्रा

लखनऊ। मंगलवार को राजधानी लखनऊ की बीकेटी तहसील क्षेत्र के गांव भौली में भूमाफियाओं द्वारा कब्जायी गई सरकारी बंजर भूमि पर जमकर बुलडोजर चलाया गया । बीकेटी राजस्व की टीम ने दोपहर बाद भौली गांव पहुंचकर भूमाफियाओं व प्रापर्टी डीलरों द्वारा कब्जायी गई बंजर भूमि गाटा संख्या - 1850, 51, 52 और 1854 (स) की भूमि पर बनाए गए चक मार्ग को बुलडोजर कार्यवाही कर जमींदोज कर दिया । ज्ञात हो कि नव भारतीय किसान यूनियन संगठन (आ0) के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल शुक्ला ने भौली गांव की सरकारी भूमि दबंग भूमाफियाओं से मुक्त कराने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखा था , जिसको 24 मार्च को दैनिक समाचार पत्र ने अपने समाचार पत्र बीकेटी तहसील में भूमाफियाओं का शिकंजा शीर्षक के तहत प्रमुखता से प्रकाशित किया था । जिलाधिकारी लखनऊ विशाख जी ने उक्त मामले पर प्रकाशित खबर का संज्ञान लेते हुए बीकेटी तहसील को मामले पर कार्रवाई के निर्देश जारी किए थे, जिसके तहत भूमाफियाओं द्वारा कब्जायी गई सरकारी बंजर भूमि को मंगलवार को भौली गांव पहुंची राजस्व की टीम ने जमींदोज कर दिया ।

बिना बिजली व पानी से जूझ रहा सन्तकृपाल नगर आश्रम, सेवादार परेशान

संडीला (हरदोई) संत कृपाल आश्रम से जुड़ा मुद्दा संपत्ति विवादों से जुड़ी महत्वपूर्ण समस्याओं को उजागर करता है, जो वर्तमान में आश्रम के निवासियों और कर्मचारियों के दैनिक जीवन को सीधे प्रभावित कर रहा है।लम्बे समय से संबंधित दोनों पक्षों के बीच कोर्ट में लंबित विवादों के कारण पेयजल और बिजली सहित बुनियादी सुविधाओं की भारी कमी हो गई है। लगभग चार महीनों से, बिलों का भुगतान न किए जाने के कारण बिजली और पानी के कनेक्शन दोनों ही कट गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप आश्रम के कर्मचारियों, भक्तों और आसपास के समुदाय के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा हो गई हैं।आध्यात्मिक और धर्मार्थ गतिविधियों के लिए जाना जाने वाला संत कृपाल आश्रम, इस क्षेत्र में कई लोगों के लिए समर्थन का स्तंभ रहा है। बिजली और पानी जैसी आवश्यक सेवाओं की कमी न केवल आश्रम के दैनिक कार्यों में बाधा डालती है, बल्कि वहाँ रहने वालों के लिए स्वास्थ्य जोखिम भी पैदा करती है। यह स्थिति संपत्ति विवादों के व्यापक निहितार्थों को रेखांकित करती है, जहाँ समुदाय की आवश्यक ज़रूरतें कानूनी लड़ाई और स्वामित्व के दावों के पीछे रह जाती हैं।

अंगदान बढ़ाने को एमपी का रास्ता अपनाएं

मध्य प्रदेश सरकार ने अंगदान करने वालों को सम्मानित करने के साथ उनके परिवार को आयुष्मान भारत योजना का लाभ देने जा रही है। इसमें अंगदान करने वाले के परिवार को प्रति वर्ष पांच लाख रुपये तक का निःशुल्क इलाज मिलेगा। जागरूकता बढ़ाने के लिए 18 लाख रुपये की डॉक्यूमेंट्री बनाई जा रही है। राज्य का स्टेट आर्गन एवं टिश्यू ट्रांसप्लांट पोर्टल भी तैयार हो रहा है। मध्य प्रदेश चिकित्सा विभाग के संचालक डॉ. एके श्रीवास्तव ने बताया कि शीघ्र ही इस संबंध में शासन स्तर पर निर्णय हो जाएगा। निश्चय ही यह निर्णय भारत की महर्षि दधिचि की देहदान की परम्परा को आगे बढ़ाएगा।मध्य प्रदेश सरकार का यह निर्णय लोगों को अंगदान के लिए प्रेरित करेगा।वैसे जो कार्य मध्य प्रदेश सरकार करने जा रही है, उसे प्रत्येक प्रदेश को लागू करना चाहिए।अच्छा हो कि ये केंद्र की ओर से लागू हो।इस कार्य के लिए जागरूकता अभियान भी चलाने की जरूरत है। इसके लिए लोगों को प्रेरित करने के साथ प्रोत्साहित भी करना होगा।

भारत में प्रतिवर्ष पांच लाख से ज्यादा लोग वक्त पर अंग न मिलने से मौत का शिकार हो जाते हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इनमें से दो लाख के आसपास लोगों की मौत लिवर नहीं मिलने की वजह से होती है।इन मरने वालो में अधिकतर वे लोग होतें हैं जो पैसा देकर अंग नही खरीद सकते। पैसे वाले तो मन मांगा मोल देकर अंग खरीद लेते हैं।इसी कारण मानव अंगों के अवैध कारोबार को बढ़ावा मिलता है।भारत में प्रतिवर्ष दस लाख व्यक्तियों में अंगदान करने वालों की संख्या 0.16 है। विकसित देशों जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, नीदरलैंड और जर्मनी में यह संख्या 10 से 30 के मध्य है। हमारे देश में इस संख्या के कम होने के कारण हैं-सही जानकारी का अभाव, धार्मिक मान्यता, सांस्कृतिक भ्रांतियां और पूर्वाग्रह। कई देशों में अंगदान ऐच्छिक न होकर अनिवार्य है। भारत में ऐसा कर पाना संभव नहीं है, लेकिन जागरूकता पैदाकर इस संख्या को बढ़ाया जा सकता है। लोगों में अंधविश्वास है कि यदि मृत व्यक्ति की आंखों को दान दिया जाता है तो उसे मरने के उपरांत स्वर्ग नहीं मिलता या अगले जन्म में वह आंख या उस अंग के बिना पैदा होगा, जबकि अंगों को शरीर से निकालने से परंपरागत अंत्येष्टि क्रिया या दफन क्रियाओं में कोई बाधा नहीं आती। इससे शरीर के रंग-रूप में भी कोई परिवर्तन नहीं होता।अपने अंगों को मृत प्राय- रोगियों को बहुमूल्य उपहार के रूप में दान देकर अपनी मृत्यु को जीवन समान सार्थक बनाया जा सकता है।

एक मृत व्यक्ति के अंगदान से नौ लोगों को नया जीवन मिल सकता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, राष्ट्रीय अंग प्रत्यारोपण प्रतीक्षा सूची में 1,04999 पुरुष, महिला और बच्चे आज भी इस इंतज़ार में हैं कि कोई अंगदान करेगा और वे अपना जीवन जी सकेंगे। , राष्ट्रीय अंग प्रत्यारोपण प्रतीक्षा सूची में अकेले किडनी के जरूरतमंद व्यक्ति ही 88551 है।भारत में प्रतिवर्ष लगभग डेढ़ लाख मौतें सड़क हादसों से होती हैं। वर्ष 2022 में ही 168491 मौत हुई। इसका मतलब औसतन हर रोज सड़कों पर 1000 से ज्यादा दुर्घटनाएं होती हैं और 400 से ज्यादा लोग दम तोड़ देते हैं।

इनमें सबसे पहले मस्तिष्क पूरी तरह से कार्य करना बंद कर देता है, ऐसा शरीर अंगदान के लिए उपयुक्त होता है। फिर भी बमुश्किल दो -तीन प्रतिशत भाग्यशाली लोगों को नए अंग मिलते हैं।हृदय, फेफड़े, लिवर, किडनी, आंत, पैंक्रियाज ऐसे अंग हैं, जो मृत व्यक्ति के परिजनों द्वारा दान किए जा सकते हैं। आंख का कॉर्निया, हड्?डी, त्वचा, नस, मांसपेशियां, टेंडन, लिगामेंट, कार्टिलेज, हृदय वाल्व भी मृत्यु के बाद किसी अन्य व्यक्ति के काम आ सकते हैं। जीवित व्यक्ति एक पूरी किडनी व लिवर का कुछ हिस्सा दान में दे सकता है। शेष एक किडनी से दानदाता का जीवन व्यतीत हो सकता है । लिवर समय के साथ बढ़ जाता है और पुन- अपनी पुरानी अवस्था में लौट आता है इसलिए दाता को किसी प्रकार की कोई दिक्?कत नहीं होती है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन एवं महान संस्कृति है। दान, धर्म एवं उच्च संस्कार प्राचीन काल से ही हमारे समाज में वरिष्ठ स्थान रखते रहे हैं। महर्षि दधीचि ने दान की पराकाष्ठा का उदाहरण समाज के समक्ष रखा। वह भारतीय संस्कृति के प्रथम अंगदानी कहे जाते हैं। देवता और दानव में युद्ध चल रहा था !दानव देवताओं पर भारी पड़ रहे थे। देवताओं को समझ नहीं आ रहा था कि युद्ध में कैसे विजय पाई जाए। इसके लिए वे ब्रह्मा जी के पास गए। ब्रह्मा जी ने सुझाव दिया कि महर्षि दधीचि की अस्थियों से बने अस्त्र से दानवों को पराजित किया जा सकता है। देवता महर्षि दधीचि के पास गए। याचना की। महर्षि दधीचि द्वारा दी गई अस्थियों से बने वज्र से राक्षास ब्रजासुर का बद्ध हुआ। दानव पराजित हुए।

आर्यव्रत की हजारों साल पुरानी देहदान और अंगदान की इस परंपरा में आज भी लोगों की रुचि नहीं है। मुझे याद है कि लगभग 40 साल पहले उत्तर प्रदेश के बिजनौर के स्टेडियम में खेल प्रतियोगिता के दौरान भाला लगने से एक कर्मचारी घायल हो गया था।

उसे खून की जरूरत थी।कहे जाने पर भी उसके परिवारजनों ने खून नहीं दिया था। उसकी मदद के लिए स्टेडियम के खिलाड़ी आगे आये। उनके रक्त देने से कर्मचारी की जान बची।अच्छा यह है कि अब रक्तदान के प्रति तो लोगों में जागरूकता बढ़ी है, किंतु अंगदान के प्रति अभी चेतना नही है।अंगदान के प्रेरित करने वाले चिकित्सकों की भी कमी है।यदि बड़े और सरकारी अस्पताल के चिकित्सक मृतक के परिजनों को अंगदान के लिए प्रेरित करने लगे तो बड़ा काम हो सकता है।

हालांकि हेल्थ प्रोफेशनल आमतौर पर अंगदान के विषय पर मृतक के परिजनों से बात करने में अटपटा महसूस करते हैं। नई दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ समीरन नंदी ने डीडब्लू को बताया, ÷डॉक्टर मृतक के अंगों को दान देने के बारे में पूछने से कतराते हैं. कोई इस बारे में प्रोत्साहन भी नहीं है और बदले की कार्रवाई का डर भी रहता है।"एक बात ओर अंगदान करने के इच्छुक लोग बढ़ भी जाएं तो सभी अस्पतालों में अंग प्रत्यारोपण से जुड़ी तमाम प्रक्रियाओं के लिए जरूरी साजो सामान या उपकरण मौजूद नहीं हैं।

भारत में सिर्फ 250 अस्पताल ही नेशनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेशन (नोटो) से पंजीकृत हैं। ये संगठन देश के अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम का समन्वय करता है।यानी देश में प्रत्येक 43 लाख नागरिकों के लिए, तमाम सुविधाओं और उपकरणों वाला सिर्फ एक अस्पताल है. भारत के देहाती इलाकों में तो ट्रांसप्लांट सेंटर कमोबेश हैं भी नहीं।

अंगदान की प्रक्रिया बहुत लाभकर है पर जिस तेजी से बढ़नी चाहिए, उस तेजी से नहीं अंगदान के नाम पर आंख देना ही शुरू हुआ है।यह भी न के बराबर।जबकि मानव कल्याण के लिये अंगदान का प्रचार प्रसार बहुत जरूरी है।रक्तदान में जरूर तेजी आई है।

प्रत्येक वर्ष तीन अगस्त को अंगदान दिवस मनाया जाता है।एक दिवस में इस महत्वपूर्ण कार्य की इतिश्री कर दी जाती है।जबकि प्रत्येक पल अंगदान के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। अंगदान के लिए जनजागरण की जरूरत है। स्कूली शिक्षा से छात्रों में जनजागरण के लिए जागरूकता विकसित की जानी चाहिए। अन्य अभियानों की तरह अंगदान के लिए भी अभियान चलाने की जरूरत है।इसके लिए विभिन्न धर्मगुरूओं से संपर्क कर उनसे अनुरोध किया जाए कि वह अंगदान के लिए अपने समर्थकों को प्रेरित करें।मध्य प्रदेश की तरह अंगदान करने वालों परिवारों के सममानित करने के साथ उन्हें प्रोत्साहित करने आयुष्मान योजना जैसी सरकारी योजना का लाभ दिलाने की भी जरूरत है।

वैसे हाल में अंगदान के लिए कई अच्छे स्लोगन सामने आए हैं।मरने के बाद भी यदि दुनिया की खूबसूरती देखते रहना चाहते हों तो आंखे दान करो।मरने के बाद भी दिल की धड़कन महसूस करनी हों, तो दिल दान करों।इस तरह के और रोचक नारे और स्लोगन बनाकर बढ़ियाकर प्रचार करने महर्षि दधीचि की देहदान की परम्परा को ओर आगे बढ़ाया जा सकता है और ज्यादा लोगों की जान बचायी जा सकती हैं।

अशोक मधुप

संपादकीय

लेखकों का सम्मेलन हो, सभी श्रोता हिन्दुस्तानी हों, लेकिन वक्ता का केवल अंग्रेजी में व्याख्यान देना कितना जायज है?

चाहे साहित्य अकादमी का सभागार हो, नेशनल बुक ट्रस्ट का कोई कार्यक्रम, कोई पुस्तक मेला या फिर किसी हिन्दी पुस्तक का विमोचन। अक्सर देखा जाता है कि वक्ता अंग्रेजी में बोलना ही अपनी शान समझते हैं, जबकि अधिकांश श्रोता हिन्दी भाषी होते हैं। कुछ श्रोता गैर-हिन्दी भाषी अवश्य होते हैं, लेकिन वे भी प्राय: हिन्दी समझते हैं। परिणामस्वरूप, अधिकतर श्रोता भाषण के दौरान सिर्फ समय बिताने के लिए मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। यह स्थिति कई गंभीर प्रश्न खड़े करती है।

भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, ज्ञान और प्रगति का वाहक भी होती है। किसी भी सम्मेलन का उद्देश्य विचारों और ज्ञान का आदान-प्रदान होता है, लेकिन जब वक्ता और श्रोता एक ही भाषा नहीं समझते, तो यह उद्देश्य अधूरा रह जाता है। यह न केवल भाषा बल्कि संस्कृति के प्रति भी उपेक्षा का संकेत देता है। यदि किसी सम्मेलन या पुस्तक विमोचन में भाग लेने वाले सभी लोग अंग्रेजी में सहज नहीं हैं, तो केवल अंग्रेजी में व्याख्यान देना अनुचित है।

सम्मेलनों में द्विभाषी व्याख्यान आयोजित किए जाने चाहिए, जहां हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का उपयोग किया जाए। भाषा का चयन सम्मेलन के उद्देश्य और श्रोताओं की आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए। हिन्दी, भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़ती है और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में सहायक होती है। यह कला, साहित्य और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती है, जिससे समाज समृद्ध होता है।

हिन्दी भाषा जितनी मजबूत होगी, भारत भी उतना ही सशक्त होगा। 1835 में ब्रिटिश संसद में लॉर्ड मैकाले ने कहा था कि भारत की भाषा और संस्कृति इतनी मजबूत है कि यदि इसे नष्ट कर दिया जाए, तो भारत को गुलाम बनाया जा सकता है। इतिहास गवाह है कि ऐसा हुआ भी। अंग्रेज तो चले गए, लेकिन अंग्रेजियत अब भी बनी हुई है। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि हिन्दी भाषी भारत का भविष्य क्या होगा?

जापान, चीन, रूस जैसे देश अपनी भाषा में ही सरकारी कार्य करते हैं। जापान में यदि कोई सरकारी अधिकारी जापानी भाषा नहीं जानता हो, तो उसे राजपत्रित अधिकारी नहीं बनाया जाता, जबकि भारत में ऐसा कोई नियम नहीं है। यहां तक कि हिन्दी बिल्कुल न जानने वाले भी उच्च प्रशासनिक पदों पर आसीन हो जाते हैं। यह एक गंभीर विडंबना है।

हिन्दी से बचने का एक प्रमुख कारण यह मानसिकता है कि हिन्दी कठिन भाषा है, और हिन्दी में बोलना अशिक्षित या कम शिक्षित होने का संकेत देता है। यह एक मनोवैज्ञानिक भ्रांति है। हिन्दी वास्तव में एक सरल भाषा है, जो जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी जाती है। भारत सरकार ने भी राजभाषा नियमों में यह प्रावधान किया है कि अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को हिन्दी रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी कहा है—"आप जिस तरह बोलते हैं, उसी तरह लिखिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।"

संक्षेप में कहा जाए तो, भाषा किसी भी देश के विकास का एक अनिवार्य पहलू है। यह शिक्षा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रत्येक देश को अपनी भाषाओं को संरक्षित और विकसित करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए, ताकि वह अपने नागरिकों के लिए एक समृद्ध और समावेशी भविष्य सुनिश्चित कर सके। लेखकों के सम्मेलन में केवल अंग्रेजी में व्याख्यान देना उचित नहीं है; यह हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति की अनदेखी के समान है।

लेखक- कृष्ण कुमार

सुनीता विलियम्स- साहस से छुआ आसमान

"अगर देखना चाहते हो मेरे हौसलों की उड़ान तो आसमान से कह दो कि और ऊँचा हो जाए"। ये पंक्तियाँ निश्चित ही ऐसा आभास कराती हैं कि यह असंभव जैसी बात है। क्योंकि आसमान में उड़ने वाली बात किसी ऐसे सपने जैसी ही लगती है, जो पूरा हो ही नहीं सकता। लेकिन व्यक्ति के पास साहस और धैर्य है तो वह असंभव लगने वाले लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकता है। भारतीय मूल की बेटी सुनीता विलियम्स ने ऐसा ही एक कीर्तिमान करके दिखाया है। धरती पर रहने वाली सुनीता ने अपने साहस और धैर्य से आसमान को छूने को साहसी कार्य किया है। यह एक ऐसा कीर्तिमान है जो भविष्य के लिए एक मील का पत्थर है। जो अंतरिक्ष विज्ञान के लिए एक दिशा बोध बनेगी। आज अंतरिक्ष विज्ञान जगत के लिए सुनीता विलियम्स एक ऐसा नाम है, जिसके साथ विज्ञान को देने के लिए बहुत कुछ है। जिनकी गाथा कहते कहते लोगों के मुंह थक जाएंगे, पर गाथा ख़त्म नहीं होगी। सुनीता विलियम्स, बुच विलमोर सहित चार अंतरिक्ष यात्री जब धरती पर लौटे तो अमेरिका में खुशी का वातावरण था, तो भारत में भी असीमित उल्लास था। सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की हैं, इसलिए यह पूरे विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि उन्होंने भारत का भी मान बढ़ाया है।

सुनीता विलियम्स केवल नौ दिन के लिए अंतरिक्ष की सैर पर गई थीं, लेकिन यह क्या मालूम था कि यह नौ दिन की यात्रा नौ माह और चौदह दिन की हो जाएगी। जाहिर है यात्रा सरल नहीं थी। क्योंकि अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण का अभाव रहता है। हालांकि सुनीता विलियम्स की यह तीसरी अंतरिक्ष यात्रा थी। हम जानते हैं धरती से वायुमंडल की परिधि समाप्त होने के बाद अंतरिक्ष की दुनिया प्रारम्भ होती है। अंतरिक्ष के बारे में कहते हैं कि मानव आकृति अधर में ही लटकी रहती है। अगर कोई यात्री अंतरिक्ष यान में भी गया है, तो भी उसे आधार नहीं मिलता। ऐसा लगता है जैसे वजनहीन हो गए हैं। अंतरिक्ष में चल फिर नहीं सकते। बस तैरते से रहते हैं। ऐसी स्थिति में अंतरिक्ष में जाना निश्चित ही अत्यंत दुष्कर कार्य है। भारतीय मूल की बेटी सुनीता विलियम्स और उनके साथ गए बुच विलमोर ने जिस साहस का परिचय दिया, वह वास्तव में काबिले तारीफ़ है। लेकिन एक बात यह भी है कि अंतरिक्ष में जाना किसी चुनौती से कम नहीं है। वहां का जीवन पृथ्वी से बहुत भिन्न है। अंतरिक्ष में पहुंचने के बाद चारों अंतरिक्ष यात्रियों का यान ज़ब भटक गया था। तब उनके मन में भी कई तरह के सवाल उठे होंगे, क्योंकि ऐसी स्थिति में यह पता नहीं होता कि वे धरती पर लौटेंगे भी या नहीं। या अंतरिक्ष में कब तक यूँ ही घूमते रहेंगे, इसका भी पता नहीं, लेकिन एक जिजीविषा थी, जो उन सबको जीने का उल्लास दे रही थी। कहते हैं कि जिसके मन में जीने का उत्साह हो तो समस्याएं सरल होती चली जाती हैं। चारों अंतरिक्ष यात्री पूरे मन से अपने मिशन पर थे। ज़ब तक वे अंतरिक्ष में थे, कुछ न कुछ करते रहे यानी शोध के कार्य में इतने व्यस्त हो गए कि उनको पता ही न चला कि उनके जीवन में कोई समस्या है।

अमेरिका के फ्लोरिडा के तट पर समुद्र में ज़ब अंतरिक्ष यान उतरा, उस समय का दृश्य सबने देखा। कितना अद्भुत, कितना चमत्कार करने वाला दृश्य था। हर कोई इस अविश्वसनीय घटना के बारे सुनकर आश्चर्यचकित ही था। जिन्होंने इस दृश्य को अपनी आँखों से देखा, वह ऐसी घटना दुबारा देख पाएंगे या नहीं, यकीनी तौर पर नहीं कहा जा सकता। यह घटना कोई सामान्य नहीं थी। जो अंतरिक्ष यात्री साढ़े नौ महीने हवा में तैर कर जीवन बिता रहे थे, उनके उनका जीवन वास्तव में बदल चुका था। धरती पर जीने के तरीके अलग हैं, यहां गुरुत्वाकर्षण बल के कारण सभी कार्य आसान हैं। यह आसान इसलिए भी हैं, क्योंकि यह एक सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा बन जाती हैं। अंतरिक्ष का जीवन अलग है। वहां सभी वस्तुएँ हवा तैरती रहती हैं। खाने की वस्तु को भी हवा में तैरते हुए ही खाया जा सकता है। वहां नींद लेने के लिए खुद को बेल्ट से बाँधना होता है। अगर ऐसा नहीं करते तो तैरते हुए सोना बहुत ही मुश्किल काम है। यहां तक कि प्यास बुझाने के लिए अपनी पेशाब और पसीने को शुद्ध करके पीने योग्य बनाया जाता है और वही पीने के काम आता है। शून्य गुरुत्वाकर्षण की अवस्था शरीर पर कई प्रकार के प्रभाव उपस्थित करती हैं। इससे शरीर का संतुलन धरती पर रहने जैसा नहीं होता। रक्त संचरण भी सामान्य नहीं होता। इतना होने के बाद भी इन चार अंतरिक्ष यात्रियों ने साहसिक यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा किया। नासा ने इस अभियान को बखूबी अंजाम दिया। वर्तमान में अंतरिक्ष विज्ञान को शोध के अनेक विषय देने का काम किया है। भारत भी इस मामले में किसी भी दृष्टि से पीछे नहीं है। भारत ने जिस प्रकार से अपने चंद्रयान अभियान को सफलतापूर्वक पूरा किया, वह सारी दुनिया को अचरज में डालने जैसा ही है। इसलिए भारतीय वैज्ञानिक भी अंतरिक्ष के लिए एक उपलब्धि को पाने जैसा ही कार्य कर रहे हैं।

चूँकि सुनीता विलियम्स भी भारतीय मूल की हैं, इसलिए नासा की इस उपलब्धि को भारतीय प्रतिभा का कायल माना जा रहा है। आज का अमेरिका बिना भारतीय प्रतिभा के आगे नहीं बढ़ सकता। ऐसा अमेरिका के कई क्षेत्रों में साबित हो रहा है। सुनीता विलियम्स के जीवन और उनके कार्य में भारतीय संस्कार विद्यमान हैं। इससे पूर्व अंतरिक्ष में जाते समय वे अपने साथ भागवत गीता ले गई थीं और इस बार भगवान गणेश की प्रतिमा साथ लेकर गई।

सुनीता विलियम्स और बुच विलमोर सहित चार सहयोगियों ने वहां पर साढ़े नौ महीने जो शोध किया, वह अंतरिक्ष विज्ञानियों के लिए एक ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज ही कहा जाएगा, जो मिसाल है। आने वाले समय में विज्ञान जगत इनसे बहुत कुछ सीखेगा, यह तय है। अंतरिक्ष में जाने का यह मामला पहला नहीं है, लेकिन इतनी लम्बी अवधि तक अंतरिक्ष में रहने का यह पहला मामला है। इसलिए इसे औरों से अलग किस्म के रूप में देखा जा रहा है। भारतीय मूल की बेटी सुनीता के इस हौसले का पूरे मन से अभिवादन।

एक विदूषक से घबड़ाती राजसत्ता

क्या जमाना आ गया है कि राजसत्ता एक अदने से विदूषक से घबड़ाने लगी है। मुंबई में कुणाल कामरा नाम के एक विदूषक की पैरोडी के बाद एक वर्णसंकर सियासी दल के कार्यकर्ताओं ने कुणाल के दफ्तर में जिस तरह से तबाही मचाई उसे देखकर लगता है कि राजसत्ता कितनी कमजोर और असहिष्णु है। कुणाल ने किसी का नाम नहीं लिया। किसी को गाली नहीं दी, लेकिन कहते हैं न कि- 'चोर की दाढ़ी में तिनका' होता है ,सो चोरों ने कुणाल को निशाने पर ले लिये। अब महाराष्ट्र की पूरी राजसत्ता कुणाल के खिलाफ राजदंड लिए खड़ी है। कोई माने या न माने किन्तु ये कटु सत्य है कि भाजपा जब से सत्ता में आयी है तभी से देश में असहिष्णुता ,साम्प्रदायिकता,संकीर्णता और बेसब्री सीमा से ज्यादा बढ़ गयी है। भाजपा सनातन की बात करती है ,भारतीय शिक्षा और संस्कारों की बात करती है लेकिन इसके बारे में शायद जानती कुछ भी नहीं है। यदि जानती होती तो कुणाल कामरा के शो को लेकर तालिबानों की तरह उसके ऊपर टूट न पड़ती। कामरा के शो को लेकर बवाल शिव सेना [एकनाथ शिदे] ने किया है। शिदे के बारे में कुणाल ने जो कहा वो कटु सत्य है कि शिदे ने न सिर्फ मूल शिव सेना से गद्दारी की बल्कि अपना सियासी बल्दियत भी बदली। बस यही वो दुखती रग थी जिसके ऊपर हाथ रखने से एकनाथ के कार्यकर्ता गुंडई पर उतर ए और उन्होंने कुणाल को सजा देने का दुस्साहस दिखा दिया।

शिवसेना हो या भाजपा या कांग्रेस जब भी सत्ता में आते हैं तब उनका चरित्र लगभग एक जैसा हो जाता है। कांग्रेस चूंकि लम्बे समय तक सत्ता में रही इसलिए इसने सब्र करना भी सीखा और हास्य बोध भी पैदा किया, अन्यथा कांग्रेस के राज में लक्ष्मण,शंकर,सुधीर तैलंग या काक जैसे मशहूर व्यंग्य चित्रकार पनप न पाते। न राग दरबारी लिखी जा सकती थी और न हरिशंकर परसाई जैसे लेखक जीवित रह पाते। परसाई जी को भी संघियों ने मारने की कोशिश की थी लेकिन वे अपनी कमर टूटने के बाद भी दशकों तक अपना काम करते रहे। शिवसेना को शायद ये पता नहीं है कि शिवसेना का ट्रीटमेंट हो या संघ का ट्रीटमेंट, किसी विदूषक को, किसी व्यंग्यकार को किसी हास्य कलाकार को उसका काम करने से रोक नहीं सकता।

भारतीय ज्ञान परमपरा की वकालत करने वाले संघी और शिवसैनिक शायद भारतीय ज्ञान परंपरा को जानते ही नहीं है। उन्हें पता ही नहीं है कि साहित्यमें ,नाटक में कितने रस होते हैं? वे यदि ये सब जानते तो खुद अपने पुरखों की कला का सम्मान करते। शिवसेना के संस्थापक बाला साहब ठाकरे खुद एक व्यग्यकार यानि विदूषकों की बिरादरी से आते थे। व्यंग्य के लिए कलम हो,कूची हो या मंच हो एक सशक्त माध्यम होता है। हास्य कलाकर हिंदुस्तान में भी होते हैं और पाकिस्तान में भी। इंग्लैंड में भी होते हैं और अमरीका में भी। जीवन में यदि हास्य और व्यंग्य न हो तो जीवन न सिर्फ नीरस हो बल्कि नर्क बन जाये। हास्य-व्यंग्य कलाकार या लेख जीवन को सरस् बनाता है। कटु सत्य को शक्कर में पागकर आपके सामने पेश करता है और ऐसा करना दुनिया के किसी भी मुल्क में अपराध नहीं है। केवल तालिबानी संस्कृति में हसने,व्यंग्य करने पर स्थाई रोक होती है।

भारत की राजनीती में हास्य बोध लगभग मर चुका है ,हमारे नेता अब व्यंग्य करने वले को,व्यंग्य लिखने वाले को अपना दुश्मन मानने लगे हैं यही वजह है कि पिछले एक दशक में कुणाल कामरा हों या कीकू सभी को धमकियों का समाना करना पड़ता है, जेल जाना पड़ता है। लेकिन परसाई के वंशज कभी हार नहीं मानते। कुणाल ने भी हार नहीं मानी है। उसे हार मानना भी नहीं चाहिए। भाजपाई और शिवसेना के कार्यकर्ता शायद न चार्ली चैप्लिन को जानते हैं और न हमारे यहां के बीरबल को। वे मुल्ला नसरुद्दीन को भी नहीं जानते उन्होंने मुंगेरीलाल के बारे में भी पढ़ा और सुना नहीं है। वे तो यदि कुछ सीखे हैं तो तालिबानियों से सीखे हैं/भाजपा को मुसलमानों से नफरत है तो शिवसेना को बिहारियों और गैर मराठियों से। दोनों कानून को अपने हाथ में लेने में कोई संकोच नहीं करते,खासतौर पर वहां ,जहां उनकी अपनी सरकार हो। कुणाल कि हाथ में संविधान की प्रति देख उन्हें लगा की मंच पर कुणालहिं राहुल गाँधी खड़े हैं।

हमारे यहां जो तमाम शब्द लोकभाषा में प्रचलित और स्वीकार्य शब्द थे उन्हें भाजपा ने सत्ता में आते ही असंसदीय घोषित कर दिया। अर्थात आप उनका इस्तेमाल संसद के भीतर नहीं करसकते,किन्तु संसद के बाहर सड़क या किसी और मंच पर इनका इस्तेमाल न अपराध है और न इन्हें प्रतिबंधित किया गया है। कुणाल ने जिस 'गद्दार' शब्द का इस्तेमाल अपने गीत में किया वो भी सरकार की नजर में अससंदीय है। संसद की बुकलेट में 'गद्दार', 'घड़ियाली आंसू', 'जयचंद', 'शकुनी', 'जुमलाजीवी', 'शर्मिंदा', 'धोखा', 'भ्रष्ट', 'नाटक', 'पाखंड', 'लॉलीपॉप', 'चाण्डाल चौकड़ी', 'अक्षम', 'गुल खिलाए' और 'पिठ्ठू' जैसे शब्दों का इस्तेमाल अब लोकसभा और राज्यसभा में अब असंसदीय माना गया है। मेरा तो एक उपन्यास ही 'गद्दार' नाम से है।गनीमत है की कांग्रेस से भाजपाई हो चुके सिंधिया समर्थकों ने इस पर कोई बखेड़ा खड़ा नहीं किया। वैसे भी राजनीति में गद्दारी और बाप बदलना एक आम मुहावरा है। इसे सुनकर यदि कोई बमकता है तो उसे राजनीति छोड़ देना चाहिए।

कुणाल कामरा कोई साहित्यकार नहीं है। वे एक स्टेंडअप कॉमेडियन हैं। ये उनका व्यवसाय है। ये व्यवसाय गैर कानूनी नहीं है, इसलिए उनके ऊपर हुए हमले की, उन्हें दी जाने वाली धमकियों की घोर निंदा की जाना चाहिए। हमारे यहां तो निंदकों तक को नियरे रखने की सलाह दी जाती है क्योंकि वे स्वभाव को बिना पानी-साबुन कि निर्मल करने का माद्दा रखते हैं। एक सभ्य समाज में यदि हास्य-व्यंग्य को लेकर सरकार की और से असहिष्णुता का प्रदर्शन किया जायेगा, कलाकारों को धमकाया जायेगा, उन्हें जेलों में डाला जाएगा तो लोकतंत्र जीवित नहीं रह सकता। हास्य-व्यंग्य कोई गाली नहीं हैं। ये अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है ठीक उसी तरह जिस तरह की टीवी है, रेडियो है सोशल मीडिया है। इन सभी माध्यमों की सुरक्षा अनिवार्य है। इस मामले में देश की सरकार को ही नहीं बल्कि देश की सर्वोच्च न्यायपीठ को भी हस्तक्षेप करना चाहिए और कुणाल को ही नहीं बल्कि हरिशंकर परसाई परम्परा को सारंक्षण देन चाहिए। अन्यथा वो दिन दूर नहीं जबआपको ताश के 52 पत्तों में से जोकर गायब नजर आये।

राकेश अचल

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। **R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,** E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त ख़बरें

श्रीमद्भागवत कथा में आज पहुँचेगे कमल नयन दास शास्त्री

मिश्रिख (सीतापुर)। प्राचीन हनुमान मंदिर किशुनापुर इस्लामनगर में पूज्य महंत श्री परमात्मा दास जी महाराज पावन व्यवस्थापन चल रही श्री मद्भागवत कथा एवं श्री राम

महायज्ञ के पूर्णाहुति के अवसर पर श्री धाम अयोध्या से अनंत श्री विभूषित परम पूज्य सदगुरुदेव भगवान श्री श्री 1008 श्री नृत्य गोपाल दास जी महाराज अध्यक्ष श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट अयोध्या श्री मणिराम दास छावनी अयोध्या के उत्तराधिकारी परम् पूज्य श्री सदगुरुदेव भगवान श्री श्री 1008 श्री कमल नयन दास शास्त्री जी महाराज का शुभ आगमन कल दिनांक 26 मार्च 2025 को होगा।जिसको लेकर के सारी तैयारियां पूर्ण हो चुकी है।

16 शिक्षकों की नौकरी पर लटकी तलवार, खंड शिक्षा अधिकारियों ने दर्ज कराया मुकदमा

सीतापुर। जिले में शिक्षकों की नियुक्ति में बड़ा घोटाला सामने आया है जिले में 12,460 शिक्षक भर्ती के तहत नवनियुक्त शिक्षकों के शैक्षिक प्रमाणपत्रों की जांच में 16 शिक्षकों के दस्तावेज फर्जी पाए गए हैं। पिछले साल जिले में 1100 शिक्षकों को सहायक अध्यापक के पद पर नियुक्ति मिली थी इनमें से अब तक लगभग 500 शिक्षकों के दस्तावेजों का सत्यापन हो चुका है बेसिक शिक्षा अधिकारी के अनुसार, अभी 600 शिक्षकों के दस्तावेजों की जांच रिपोर्ट आनी बाकी है। फर्जी शिक्षकों की संख्या और बढ़ सकती है विश्वविद्यालयों से कराई गई जांच में इन 16 शिक्षकों के टीईटी और डीएलएड प्रमाणपत्र फर्जी निकले हैं पिसावां के खंड शिक्षा अधिकारी ने तीन शिक्षकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है इनमें प्राथमिक स्कूल बांसी के राहुल कुमार, फखरपुर के अकबर शाह और ढकिया कला के जितेंद्र कुमार शामिल हैं बीएसए अखिलेश प्रताप सिंह ने बताया कि सभी 16 शिक्षकों को नोटिस जारी किया गया था लेकिन कोई भी अपना पक्ष रखने नहीं आया अब इन शिक्षकों के खिलाफ बर्खास्तगी की कार्रवाई शुरू की जाएगी मिश्रिख के खंड शिक्षा अधिकारी कपिल देव द्विवेदी ने भी एक शिक्षक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है अन्य स्थानों पर भी मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं!!

लहरपुर में वन विभाग का एक्शन बिना परमिट काटे गए दो शीशम के पेड़, ट्रैक्टर ट्राली समेत लकड़ी भी हुई जब्त

सीतापुर लहरपुर कोतवाली क्षेत्र के गुलरी पुरवा गांव में अवैध पेड़ कटान का मामला सामने आया है मंगलवार को लकड़कट्टों ने बिना किसी परमिट के दो शीशम के पेड़ों को काट डाला सूचना मिलते ही उप वन क्षेत्राधिकारी हरीश कुमार श्रीवास्तव और वन दरोगा राज कुमार वर्मा मौके पर पहुंचे टीम ने कटी हुई। लकड़ी के साथ ट्रैक्टर-ट्रॉली (पटेला) को जब्त कर लिया क्षेत्र में लकड़कट्टों द्वारा लगातार अवैध कटान की जा रही है इससे पर्यावरण को नुकसान पहुंच रहा है वन विभाग इस पर रोक लगाने में असफल साबित हो रहा है विभाग केवल जुर्माना लगाकर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लेता है इसी कारण लकड़कट्टों के हौसले बढ़ते जा रहे हैं उप वन क्षेत्राधिकारी हरीश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि जब्त की गई लकड़ी और ट्रैक्टर-ट्रॉली के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है!!

कुएं के पास मिला नवजात का शव इलाके में मचा हड़कंप, पुलिस ने शुरू की पूछताछ

सीतापुर जनपद सीतापुर के इमलिया सुल्तानपुर थाना क्षेत्र में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है नौवा महमूदपुर के हाता गांव में एक पूजनीय कुएं के पास नवजात शिशु का शव मिला है। मंगलवार की सुबह ग्रामीणों को कुएं के पास कुछ संदिग्ध दिखा नजदीक जाकर देखने पर उन्होंने नवजात का शव पाया खबर फैलते ही मौके पर भीड़ जमा हो गई ग्राम प्रधान शिवसागर जायसवाल ने तुरंत पुलिस को सूचित किया इमलिया सुल्तानपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थाना इंस्पेक्टर शैलेन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार, पुलिस ने मौके की जांच-पड़ताल की है पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी पुलिस ने आसपास के ग्रामीणों से पूछताछ की लेकिन अभी तक नवजात की पहचान नहीं हो सकी है मामले की जांच जारी है!!

सूचना

आशीर्वाद माइक्रो फाइनेंस लिमिटेड टूण्डला ब्रान्च (1662) पुरानी ब्रॉन्च गुलाब नगर अनामिका टॉकीज में स्थित थी। अब यह ब्रॉन्च आगरा रोड़ NH2 मोहम्मदाबाद मैसी ट्रैक्टर एजेंसी के पास ठाकुर अमीर होटल के सामने स्थित है।

पीड़ित परिवार से मिले बीकेटी विधायक की आर्थिक सहायता

..... थाना सैरपुर के अन्तर्गत अहलादपुर में मामूली कहासुनी में रोक-टोक के कारण महिला को गंवानी पड़ी थी जान । ..... योजनाबद्ध तरीके से अपराधियों ने महिला को मारी थी गोली ।

स्वतंत्र प्रभात

बीकेटी /लखनऊ। राजधानी लखनऊ के सैरपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत 22 मार्च को बृजधाम कॉलोनी में एक निजी हॉस्टल के पास रहने वाले लड़के आपस में विवाद कर रहे थे जिसको देख कर ग्राम अहलादपुर की निवासिनी सारिका श्रीवास्तव(उम्र 43)ने युवकों को लड़ाई करने से मना किया और पुलिस को सूचना देने की बात कही जिसके बाद युवकों ने योजना बद्ध तरीके से महिला को गोली मार दी गई थी जिससे उनकी इलाज के दौरान मौत हो गई थी । सैरपुर व उत्तरी क्राइम सर्विलांस पुलिस टीम ने घटना में शामिल सभी पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर मंगलवार को जेल भेज दिया था । घटना की जानकारी पर पहुंचे बीकेटी विधायक योगेश शुक्ला व एसडीएम बीकेटी सतीश चंद्र त्रिपाठी ने पीड़ित परिवार से मिल कर शोक व्यक्त किया और सरकार की तरफ से 5 लाख की आर्थिक प्रदान कर परिवार को अस्वस्थ किया कि इस अपराध में सम्मिलित दोषियों को किसी भी स्थिति में बक्सा नहीं जाएगा प्रशासन एवं पुलिस द्वारा कठोरता कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी जिससे पीड़ित जनों को जल्द न्याय मिले ।

युवती ने मारपीट और मोबाइल छीनने का लगाया आरोप

..... थाना मोहनलालगंज क्षेत्र के गांव टिकरा में एक कम्पनी में कार्यरत युवती ने युवती और युवक पर मारपीट और मोबाइल छीनने का लगाया आरोप

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के मोहनलालगंज थाना क्षेत्र के अन्तर्गत एक युवती ने मोबाइल फोन छीनने और मारपीट का आरोप लगाते हुए कोतवाली मोहनलालगंज में शिकायत दर्ज कराते हुए मामले में न्याय की गुहार लगाई है । मोहनलालगंज क्षेत्र के टिकरा गांव में कार्यरत युवती सुषमा पाण्डेय पत्नी हरिशंकर ने बताया कि मैं ÷केयर फोर यू÷ कम्पनी में काम करती हूं वही पर रश्मि मिश्रा ,व दिलीप सिंह नामक युवती और युवक दोनों ने मुझे दिनांक 23 मार्च को मारा पीटा और मेरा मोबाइल ओप्पो ए 7 छीन कर अपनी गाड़ी संख्या UP32 LW 5662 से लेकर रफूचक्कर हो गए । थाना प्रभारी अमर सिंह ने बताया कि युवती की तहरीर पर विधिक धाराओं 115(2)/304(2) बीएनएस के अन्तर्गत मुकदमा पंजीकृत कर लिया गया है , जांच में दोषी पाए जाने अभियुक्तों पर सख्त कार्यवाही की जाएगी ।

यूपी में लोग 6 करोड़ ग़रीबी रेखा से ऊपर उठे , सीतापुर में प्रभारी मंत्री ने बताई सरकार की उपलब्धियां

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर। जनपद सीतापुर में केंद्र और राज्य सरकार की उपलब्धियों को लेकर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया यह कार्यक्रम यूपी सरकार के 8 साल और केंद्र सरकार के 10 साल पूरे होने के अवसर पर आयोजित किया गया प्रभारी मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह ने सरोजनी वाटिका में कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने विभिन्न विभागों के स्टालों का निरीक्षण किया महिलाओं की मदद के लिए वन स्टॉप सेंटर के वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया स्टॉल प्रतियोगिता में माध्यमिक शिक्षा विभाग को पहला गन्ना विभाग को दूसरा और आयुष विभाग को तीसरा स्थान मिला विभागों के अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में लाभार्थियों को प्रमाणपत्र, टूलकिट, चेक, नए राशन कार्ड, ऋण, रोजगार नियुक्ति पत्र और पेंशन का वितरण किया गया। मौके पर आवेदन और समाधान केंद्र भी बनाए गए यहां लोगों ने अपनी समस्याओं का समाधान कराया प्रभारी मंत्री ने कहा कि पिछले 8 वर्षों में उत्तर प्रदेश पूरे देश के सामने एक

मॉडल राज्य बना है मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में व्यापक विकास हुआ है प्रदेश जल्द ही देश में पहले स्थान पर आने की ओर बढ़ रहा है उन्होंने बताया कि पिछले 8 वर्षों में प्रदेश में 6 करोड़ से ज्यादा लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया गया है!!

जिला पंचायत सदस्य के लापता बेटे का शव गंगा में मिला, हत्या की आशंका

स्वतंत्र प्रभात

कोराव,प्रयागराज। चांद मोजरा गांव निवासी जिला पंचायत सदस्य राजेश पटेल के बेटे दिव्यांशु सिंह पटेल का शव गंगा नदी में मिला। वह बीते रविवार से लापता था, जिसके बाद परिवार ने पुलिस में गुमशुदगी दर्ज कराई थी। सोमवार को खोजबीन के दौरान उसका शव गंगा जी में मिलने से हड़कंप मच गया।

परिजनों ने जताई हत्या की आशंका

परिवार का कहना है कि दिव्यांशु के साथ अनहोनी हुई है और उन्होंने हत्या की आशंका जताई है। खासकर, क्योंकि राजेश पटेल का

बड़ा बेटा भी करीब आठ साल पहले एक दुर्घटना में जान गंवा चुका था। परिजनों को सूचना लगभग सुबह 11 बजे मिली, जिसके बाद पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई।

पुलिस जांच में जुटी

जिला पंचायत सदस्य राजेश पटेल ने मामले की गहन जांच और दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और सभी संभावित कोणों से जांच शुरू कर दी है। इस दुखद घटना से क्षेत्र में शोक की लहर है और जैसे ही मृतक की बॉडी पैतृक निवास पर पहुंची हजारों की संख्या में लोगों की भीड़ मृतक को देखने के लिए उमड़ पड़ी इस घटना से परिवारजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया हैं और परिजन प्रशासन से जल्द न्याय की मांग कर रहे हैं ।

डंपर ने बाइक सवार को मारी टक्कर तीन युवक की मौत, फैक्ट्री जाते समय हुआ हादसा

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर! जनपद सीतापुर में सोमवार की देर शाम मजदूरी करने फैक्ट्री जा रहे दो मजदूरों को तेज रफ्तार डंपर ने रौंद दिया इस दर्दनाक हादसे में बाइक सवार दो मजदूर समेत तीन लोगों की मौत हो गई जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को सीएचसी भिजवाया वाहन को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल शुरू कर दी है घटना रामपुर कलां थाना इलाके की है यहां थाना क्षेत्र के मझगवां कलां के पास हुए सड़क हादसे में चीख पुकार मच गई जानकारी के अनुसार ग्राम सतिनपुरवा निवासी मोनू गौतम अपने साथी राजेश और दुर्गेश के साथ एक साथ बाइक पर सवार होकर बिसवा स्थित अल्कोहल फैक्ट्री में काम करने जा रहे थे इसी दौरान पीछे से आ रहे तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवारों को रौंद दिया।

इस दर्दनाक हादसे में तेज रफ्तार डंपर की टक्कर से बाइक सवार तीनों गंभीर रूप से घायल हो गए सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों घायलों को सीएचसी भिजवाया जहां डॉक्टरों ने मोनू और राजेश को मृत घोषित कर दिया जबकि दुर्गेश की हालत गंभीर देखते हुए उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया है हादसे की सूचना पाकर अस्पताल पहुंचे परिजन अपनों के शवों को देखकर बदहवास स्थिति में है पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज कर मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है!!

भागवत कथा के आखिरी दिन हजारों श्रोताओं ने भागवत कथा का किया रसपान

स्वतंत्र प्रभात

रायबरेली। गुरबक्श गंज क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सभा बींझे गांव में ससवेदी, गणेश आंबिका, रूद्र हनुमत देव, सहित मोक्षदायिनी श्रीमद् भागवत कथा के हो रहे भव्य आयोजन में आखिरी दिन कथा का श्रवण करने के लिए श्रोतागणों की अपार भीड़ उमड़ पड़ी। आपको बता दें कि, ग्राम सभा बींझे में हो रही श्रीमद् भागवत कथा के सातवें दिन मंगलवार को सिधौना अमांवा से पधारी कथा व्यास संध्या भरद्वाज ने प्रमुख रूप से भगवान श्री कृष्णा और सुदामा की मित्रता व ऊधौ गोपी संवाद कृष्ण रुक्मणी विवाह भगवान का स्वधामगमन परीक्षित मोक्ष जैसी कथाओं का व्याख्यान करते हुए कथा व्यास ने बताया कि, मित्रता कैसी हो यह हमें भगवान श्री कृष्णा तथा सुदामा की मित्रता से सीखना चाहिए, मित्र के प्रति ईमानदारी, त्याग, और सम्मान का भाव ही सच्ची मित्रता कहलाती है। कथा व्यास ने बताया कि, भगवान श्री कृष्ण ने ऊधौ जी को

वृंदावन भेजा परंतु जब वहां पर ऊधो जी पहुंचे तो गोपियों के प्रेम में ऐसा डूबे कि वह भी प्रेम मय हो गए। और वह स्वयं ब्रज से नहीं आना चाहते थे भगवान कृष्ण ने माता रुक्मणी से विवाह किया। प्रभात क्षेत्र में जब कालांतरण में समय बीता भगवान ने पृथ्वी पर खूब शासन किया जब समय आया तो भगवान अपने स्वधाम को चले गए। कथा व्यास द्वारा विभिन्न प्रसंगों को सुनकर पांडाल में उपस्थित समस्त श्रोता भाव विभोर हो गए। विदित हो कि, महराजगंज विकासखंड क्षेत्र के जिहवा ग्राम सभा के रहने वाले आनंद मिश्रा द्वारा हो रही संकल्पित श्रीमद् भागवत कथा के बारे में उन्होंने बताया कि, उनके द्वारा हर दूसरे महीने अलग-अलग स्थानों पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है, यह उनके द्वारा आयोजित चौथी श्रीमद् भागवत कथा है। श्रीमद् भागवत कथा के आयोजक आनंद मिश्रा ने आखिरी दिन मंगलवार को यज्ञशाला पर यजमान के कल्याण के लिए सुंदरकांड का पाठ भी किया। इस मौके पर यज्ञशाला के प्रमुख आचार्य पंडित योगेंद्र त्रिपाठी, परिचायक अमरेश शुक्ला, अरुण कुमार त्रिपाठी, यजमान विश्वनाथ सिंह सपत्नीक सुशीला सिंह, सहित करुणा नाथ सिंह, रणविजय सिंह, पारसनाथ सिंह, योगेंद्र नाथ सिंह, सतीश नाथ सिंह, गजेंद्र नाथ सिंह, त्रिभुवन नाथ सिंह, सुरेंद्र सिंह, नागेंद्र नाथ सिंह, वीरेंद्र नाथ सिंह, विभू सिंह, औतंश नाथ सिंह, दीपांशू सिंह, हिमांशू सिंह, जितेंद्र सिंह, रागेन्द्र सिंह, रामू त्यागी सहित बड़ी तादात में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

2027 में अहंकारी सरकार को बदलना प्रथम उद्देश्य : विक्रम पांडे

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई। कांग्रेस के जिला अध्यक्ष विक्रम पांडे व शहर अध्यक्ष अनुपम दीक्षित का मनोनयन होने के बाद प्रथम जिला आगमन पर कांग्रेसियों ने उत्साह के साथ स्वागत किया। हरदोई जिले की सभी सीमाओं पर कांग्रेसियों ने अभिनंदन किया।सर्वप्रथम दोनों नवनियुक्त अध्यक्षों ने अबेडकर पार्क में बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए शहर के सुप्रसिद्ध बाबा मंदिर जाकर दर्शन कर आशीर्वाद लिया। इसके उपरांत पुलिस ग्राउंड के समक्ष स्थित गांधी प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के उपरांत जिला व शहर अध्यक्ष ने पैदल मार्च करते हुए ढोल नगाड़ों के साथ कांग्रेस कार्यालय तक कूच किया। जहां पहुंचने पर उन दोनों का कार्यकर्ताओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया। स्वागत समारोह में उत्तर प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता सचिन रावत ,अंशु अवस्थी, पूर्व प्रदेश महासचिव वरिष्ठ नेता प्रमोद सिंह, अभिषेक पटेल,पूर्व जिला अध्यक्ष मिथलेश सिंह चौहान, डॉ राजीव सिंह लोध, अजय सिंह,वरिष्ठ नेता सुनील पांडे, किरण शर्मा,कुलदीप मिश्रा,प्रवीण आदि लोगों ने

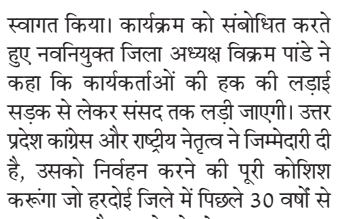

स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नवनियुक्त जिला अध्यक्ष विक्रम पांडे ने कहा कि कार्यकर्ताओं की हक की लड़ाई सड़क से लेकर संसद तक लड़ी जाएगी। उत्तर प्रदेश कांग्रेस और राष्ट्रीय नेतृत्व ने जिम्मेदारी दी है, उसको निर्वहन करने की पूरी कोशिश करूंगा जो हरदोई जिले में पिछले 30 वर्षों से सूखा पड़ा है उसको तोड़ने का आवश्यक प्रयास किया जाएगा। नवनियुक्त शहर अध्यक्ष अनुपम दीक्षित ने संबोधित करते हुए कहा देश में जो अराजकता है उसको दूर करने का कार्य केवल कांग्रेस पार्टी ही कर सकती है। हम सब राहुल गांधी, अजय राय के सिपाही हैं उनके नीतियों को जनता तक पहुंचाना हम सबका कर्तव्य है। पूर्व प्रदेश महासचिव प्रमोद सिंह ने बताया कि संगठन सृजन अभियान के तहत नवनियुक्त सम्मानित चरणों को बहुत-बहुत बधाई। अच्छा लगता है कि जब नई पीढ़ी हमारा उत्तराधिकार बनकर हमारी चीजों को संभालती है। हम सब की ढेर सारी शुभकामनाएं हैं। कार्यक्रम में प्रदेश महासचिव व बिलग्राम-मल्लावां विधानसभा से पूर्व प्रत्याशी रहे सुभाष पाल ने कहा कि प्रदेश नेतृत्व का बहुत-बहुत धन्यवाद जो जिम्मेदारी जिले के दो युवाओं को दी गई है हम सभी उम्मीद करते हैं कि आने वाले 2027 से विधान सभा चुनावों में इंडिया गठबन्धन की सरकार को लोग अपना आशीर्वाद जरूर प्रदान करेंगे। उपरोक्त कार्यक्रम को संबोधित करने वाले में मुख्य रूप से पीसीसी सदस्य अमलेंद्र त्रिपाठी , प्रदेश उपाध्यक्ष सोशल आउट रीच आफताब हैदर , प्रदेश सचिव युवा कांग्रेस अजीत विशाल , अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष तालिब खान ,महिला जिला अध्यक्ष सुनीता देवी , जिला उपाध्यक्ष गुफरान कौशर ,पूर्व महासचिव लक्ष्मी प्रकाश मिश्रा, अनुसूचित जाति विभाग जिला अध्यक्ष विनीत वर्मा , सोशल मीडिया अध्यक्ष महताब अहमद , पूर्व प्रत्याशी , ओमेंद्र वर्मा , पूर्व प्रत्याशी , आकांक्षा रावत सहित अन्य लोगों ने संबोधित किया।

कार्यालय ग्राम पंचायत कुशफर, विकास खण्ड-दरियाबाद, बाराबंकी

पत्रांक मेमो /मनरेगा ग्रा0पं0.कुशफर/सामग्री आपूर्ति/निविदा-प्रकाश/दरि0/2024-25 **दिनांक-26/03/25**

-:अल्पकालीन निविदा सूचना :-

विकास खण्ड दरियाबाद के अन्तर्गत ग्राम पंचायत कुशफर बाराबंकी में मनरेगा योजनान्तर्गत जनहित मे निम्नलिखित कार्य कराया जाना है जिसके लिए संलग्न बिल आफ क्वान्टिटी के अनुसार सामग्री आपूर्ति हेतु जीएसटी पंजीकृत फर्म मालिक ठेकेदार/आपूर्तिकर्ताओं से स्वीकृत दरो के अधीन निम्नलिखित शर्तों एवं प्रतिबन्धों के अधीन सामान आपूर्ति की निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा फार्म सम्बन्धित ग्राम पंचायत कार्यालय से दिनांक 27/3/25 से 10/4/25 तक किसी भी कार्यदिवस मे निर्धारित धनराशि जमा करके प्राप्त किये जा सकते है। मोहरबन्द निविदायें दिनांक 11/04/25 को प्रातः 10 से 02 बजे अपरान्ह तक निविदा बाक्स मे डाली जायेगी तथा दिनांक 11/04/25 को ही सम्बन्धित ग्राम पंचायत कार्यालय/ पंचायत भवन मे उपस्थित निविदाताओं के समक्ष ग्राम पंचायत की निविदा समिति के द्वारा समय 3:00 बजे खोली जायेगी।

क्र0 सं0	ग्राम पंचायत का नाम	कार्य का विवरण	कार्य की मात्रा	सामग्री की जीएसटी सहित लागत (रू0 लाख मे)	आपूर्ति ली जाने सामग्री का विवरण	धरोहर राशि (रू0 मे)	निविदा मूल्य	अवधि
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	कुशफर	वंशराज के घर से सुरेश के घर होते हुए पितबर के घर तक इण्टरलांकिग निर्माण कार्य Id-3148012031/RC/9584 86255823655359	240 X 2.40	9,98,391.00	सीमेन्ट, मौरंग, बालू, पत्थर गिटटी सरिया ईट, इण्टरलांकिग ईट, इत्यादि	2 प्रतिशत	500	3 माह
2	कुशफर	इण्टरलांकिग से मेराज के घर होते हुए अरबिन्द के घर से विनोद के घर तक इण्टरलांकिग निर्माण कार्य Id-3148012031/RC/9584 86255823655358	273 X 2.60	9,96,922.00	सीमेन्ट, मौरंग, बालू, पत्थर गिटटी सरिया ईट, इण्टरलांकिग ईट, इत्यादि	2 प्रतिशत	500	3 माह

1. धरोहर राशि का राष्ट्रीकृत बैंक/पोस्ट आफिस द्वारा निर्गत डिमाण्ड ड्राफ्ट/पे-आर्डर्स/प्रतिभूति प्रमाण जो पंचायत कुशफर विकास खण्ड दरियाबाद के नाम बन्धक करते हुए निविदि फार्म के साथ संलग्न करना होगा।
2. आपूर्तिकर्ता को संलग्न बिल आफ क्वान्टिटी के अनुसार उपरोक्त वर्णित सामग्री की आपूर्ति सम्बन्धित सचिव/प्रधान तकनीकी सहायक/अवर अभियन्ता के द्वारा बताये गये निर्दिष्ट समय/स्थान पर सामग्री आपूर्ति करना होगा।
3. आपूर्ति की गयी सामग्री का मनरेगा योजनान्तर्गत धनराशि उपलब्ध होने पर ही नियमानुसार भुगतान की कार्यवाही की जायेगी, विलम्ब आदि के लिए कार्यादायी संस्था उत्तरदायी नही होगी।
4. जी0एस0टी0 पंजीकृत बिल ही मान्य होगा।
5. विभिन्न प्रकार के शासकीय करों के भुगतान का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा।
6. आपूर्ति की गयी समाग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप करने के उत्तरदायित्व आपूर्तिकर्ता होगा।
7. आपूर्ति की गयी सामग्री के भाडा/किराये का अलग से भुगतान देय नही होगा।
8. निविदा स्वीकृत होने पर सम्बन्धित फर्म मालिक/ठेकेदार/आपूर्तिकर्ताओं से अनुबन्ध निष्पादित हो जाने पर पंचायत कुशफर मे उपरोक्तानुसार/प्राक्कलित/स्वीकृत सामग्री सम्बन्धित सचिव/प्रधान/तकनीकी सहायक/अभियन्ता के निर्देशानुसार उनके द्वारा निर्दिष्ट समय/स्थान पर सामग्री आपूर्ति करने पर विफल रहने पर धरोहर जब्त करने का ग्राम पंचायत का होगा।
6. सामग्री आपूर्ति का बिना कराण बताये अनुबन्ध निरस्त करने का अधिकार सचिव/प्रधान/निविदा समिति कुशफर मे निहित होगा।

तकनीकी सहायक
ग्राम पंचायत कुशफर
दरियाबाद, बाराबंकी।

प्रधान
ग्राम पंचायत कुशफर
दरियाबाद, बाराबंकी।

सचिव
ग्राम पंचायत कुशफर
दरियाबाद, बाराबंकी।

कार्यालय ग्राम पंचायत -हसनपुर रसकूपा विकास खंड- ददरौल जनपद- शाहजहांपुर

अल्पकालीन निविदा सूचना

दिनांक - 27-03-2025

समस्त अधिकृत पंजीकृत फर्म विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत हसनपुर रसकूपा द्वारा वर्ष 2024 - 25 की स्वीकृत केंद्रीय वित्त/राज्य वित्त/मनरेगा कार्य योजना के अंतर्गत निम्न विवरण के अनुसार निर्माण कार्य हेतु निर्धारित मानक गुणवत्ता के अनुसार उच्च कोटि के फर्म निर्माण सामग्री तथा सीमेंट, रेता, बजरी, बजरफुट, ईट, चटका रोड़ी, सरिया, लोहे की टीन, लोहे के एंगल, पाइप, प्लास्टिक पाइप, आदि कार्यस्थल पर आपूर्ति हेतु सीलबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं सभी निविदाएं/ निविदादाता के समक्ष छापने के 7 दिन बाद ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जाएंगी।

क्र सं	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	कार्य की माप
1	मैन रोड से मिट्ठू के मकान तक इंटरलॉकिंग निर्माण कार्य	193103	57 X2.15 मी0
2	विद्यावती W/O भइयालाल का हसनपुर रसकूपा में पशु आश्रय निर्माण कार्य	135872	
3	श्रीओम S/O रामेश्वर का हसनपुर रसकूपा में पशु आश्रय निर्माण कार्य	134933	

प्रधान
पुष्पा कश्यप
ग्राम पंचायत -हसनपुर रसकूपा
विकास खंड- ददरौल जनपद-
शाहजहांपुर

सचिव
अजेंद्र कुमार
ग्राम पंचायत -हसनपुर रसकूपा
विकास खंड- ददरौल जनपद-
शाहजहांपुर

संक्षिप्त ख़बरें

स्वास्थ्य शिविर में एसडीएम ने बांटी मेडिकल किट

शाहाबाद/हरदोई। उत्तर प्रदेश सरकार के सफल आठ वर्ष पूर्ण होने पर शासन के निर्देश पर तहसील में सेवा सुरक्षा और सुशासन के तहत त्रिदिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलवार को किया गया।जिसमे स्वास्थ्य विभाग,शिक्षा विभाग सहित सभी विभागों के स्टाल लगाए गए।स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगाए गए शिविर में एसडीएम दीक्षा जोशी ने दस फाइलेरिया के मरीजों को किट, चालिस टीबी के मरीजों को पोषण पोटली और दस पात्रों को आयुष्मान कार्डो का वितरण किया। सीएचसी प्रभारी डा प्रवीण दीक्षित ने बताया स्वास्थ्य शिविर में 180 मरीजों की ब्लड शुगर और बीपी सहित अन्य बीमारियों की निशुल्क जांच की गई।जिले से सीएचसी आई स्वास्थ्य टीम ने एचआईवी जांच कैंप कर लोगों को एड्स से कैसे बचना चाहिए क्या सावधानियां बरतनी चाहिए उसकी पूर्ण जानकारी देकर लोगों को जागरूक किया।जिले से काउंसलर प्रह्लाद सिंह, अर्चना सिंह,ध्यानेंद्र लैब टेक्नीशियन धर्मेंद्र सिंह,अनामिका,विचार कुमार अमन और पिंकी आदि स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने सहभागिता की।उसके बाद सीएचसी प्रभारी डा दीक्षित द्वारा नगरपालिका के सभासदों और सुपरवाइजरों के साथ बैठक कर संचारी रोगों से बचे रहने के लिए जानकारी और सावधानियों को अपनाने के लिए जागरूक किया गया।

बंधन हास्पिटल में रक्तदान शिविर का किया गया आयोजन

माधौगंज/हरदोई । कटरा बिल्हौर हाईवे मार्ग पर स्थित बंधन हास्पिटल माधोगंज द्वारा कटियार ब्लड बैंक एण्ड कम्पोनेन्ट सेन्टर हरदोई के तत्वावधान में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। जिसमें कुल 17 लोगों ने रक्तदान किया। रक्तदाताओं में विवेक कुमार, परीक्षित गुप्ता, विकास चन्द्र पटेल, डाक्टर अशोक यादव, मनीष वर्मा, प्रभाष कुमार,अनीश वर्मा, जगदीश,मोहन कश्यप, विशाल,हनी वर्मा, मुकेश सिंह, अर्जित पटेल,शिवम, किशन आदि ने रक्तदान कर पुनीत कार्य किया। डाक्टर तनवीर हुसैन ने बताया रक्तदान करना मानवता की सबसे बड़ी सेवा है, रक्तदान करने से शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि रक्तदान करने से आयरन की अतिरिक्त मात्रा नियंत्रित हो जाती है और दिल का दौरा पड़ने का खतरा भी कम होता है।रक्तदान शिविर टीम में कटियार ब्लड बैंक एण्ड कम्पोनेन्ट के डाक्टर तनवीर हुसैन, लैब टेक्नीशियन चक्रपाणि वर्मा व अनुज पटेल, मैनेजर अमित अवस्थी व सुधीर शामिल रहे। इस अवसर पर प्रमुख रूप से बंधन हास्पिटल के संचालक प्रिन्स वर्मा, डाक्टर सुरेन्द्र कुमार, आलोक पटेल आदि मौजूद रहे।

अल्लीपुर महाविद्यालय के बच्चों को मिले टैबलेट

हरदोई डॉ राम मनोहर लोहिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अल्लीपुर हरदोई में स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत स्मार्टफोन/ टैबलेट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन मुख्य अतिथि आर.पी.शर्मा व अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव ने किया। टेबलेट वितरण का कार्यक्रम में परास्नातक (एम.ए.,एम.एस-सी.) कक्षाओं के छात्र-छात्राओं को टेबलेट वितरण किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री आर.पी.शर्मा ने कहा कि इस महाविद्यालय के द्वारा बच्चों को आनलाइन शिक्षण दिया जा रहा है छात्रों के लिए ई लर्निंग के शिक्षण सिमग्री उपलब्ध करायी जा रही है । टैबलेट की भूमिका अद्वितीय है तकनीकी युग में इससे छात्र विभिन्न विषयों की जानकारी सरलता से प्राप्त कर सकते हैं आप सभी अपने स्मार्टफोन टैबलेट का उपयोग आगे की शिक्षा में कर सकते हैं।

मथुरा में मादक पदार्थों की बडी खेप पकडी, कीमत तीन करोड

मथुरा। मादक पदार्थों की बडी खेप मथुरा में पकडी गई है। पकडे गये मादक पदार्थों की अनुमानित कीमत करीब तीन करोड रूपये हैं। पुलिस ने एक तस्कर को भी गिरफ्तार किया है। मंगलवार को एएनटीएफ आगरा की टीम ने मथुरा पुलिस को साथ लेकर संयुक्त कार्यवाही की। संयुक्त टीम ने अंतर्राज्यीय अवैध मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले एक सक्रिय गिरोह के तस्कर मौ. गयास अंसारी पुत्र मरहूम मौ. खलील अंसारी निवासी नरेला दिल्ली, मूल निवासी ग्राम व पोस्ट दौतलपुर थाना जमुई जिला जमुई बिहार उम्र करीब 42 वर्ष को गिरफ्तार किया है। इसके कब्जे से टीम ने एक किलो 62 ग्राम मादक पदार्थ हेरोइन एवं 469 ग्राम स्मैक (अनुमानित अन्तर्राष्ट्रीय कीमत करीब तीन करोड रुपये) व एक मोबाइल फोन बरामद किये हैं। मंगलवार को प्रभारी निरीक्षक कोतवाली के नेतृत्व में एसआई विक्रांत तोमर (चौकी प्रभारी कृष्णानगर) द्वारा पुलिस बल व एएनटीएफ ऑपरेशनल यूनिट आगरा की संयुक्त टीम द्वारा कार्यवाही की गई।

कुख्यात ऑटो-लिफ्टिंग गिरोह का भंडाफोड़ किया: दो गिरफ्तार, पांच चोरी की बाइक बरामद

स्वतंत्र प्रभात

पूर्वी दिल्ली से ऑटो चोरी सहित सड़क अपराध के मामलों पर अंकुश लगाने के लिए, गश्ती कर्मचारियों को नियमित रूप से रोको और टोको रणनीति अपनाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। नतीजतन, कर्मचारियों ने सड़क अपराधों में शामिल अपराधियों को पकड़ने के लिए विषम घंटों के दौरान भी गहन गश्त करने पर ध्यान केंद्रित किया है। इसके अलावा, नियमित गश्त और यादृच्छिक पिकेट चेक के माध्यम से बीट क्षेत्रों में पुलिस की उपस्थिति बढ़ाई गई है। घटना:- -24.03.2025 को, एचसी आसमीन और एचसी राजेश क्षेत्र गश्त ड्यूटी पर थे। जब वे कृष्णा नगर मेट्रो स्टेशन के पास पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि एक बाइक तीन लोगों की सवारी करके उनकी ओर आ रही है। उन्होंने पंजीकरण संख्या क्र50-ष्ट-9099 वाली उस बाइक को रोका जिस पर 03 व्यक्ति बिना हेलमेट के सवार थे। पुलिस को देखकर पीछे बैठे दो लोग बाइक से कूदकर भाग गए। शक होने पर उन्होंने वाहन सवार को रोका। उसकी तलाशी लेने पर उसके पास से एक बटन वाला चाकू बरामद हुआ। पत्र पर उसकी पहचान विवेक कुमार उर्फ पव्वा निवासी बाबा मोहन राम कॉलोनी, मुकुंद पुर, दिल्ली उम्र 23 वर्ष के रूप में हुई। मोटर साइकिल पंजीकरण संख्या क्र50-ष्ट-9099 की जाँच की गई और ई-एफआईआर संख्या 22233/2024, दिनांक 28.07.2024, यू/एस 305(बी) बीएनएस, पीएस जगतपुरी, दिल्ली के अनुसार चोरी की पाई गई। इसके बाद, एचसी विवेक बाना घटनास्थल पर पहुंचे और एफआईआर संख्या 162/25, दिनांक 24.03.2025, यू/एस 25 आर्म्स एक्ट और 317 (2) बीएनएस, पीएस जगतपुरी के तहत मामला दर्ज किया और आरोपी विवेक कुमार उर्फ पव्वा को गिरफ्तार कर लिया गया। निरंतर पूछताछ के दौरान, आरोपी विवेक कुमार उर्फ पव्वा ने खुलासा किया कि उसने कन्हिया और साहिल के साथ मिलकर कई चोरी और मोटर वाहन चोरी की हैं। इसके अलावा, आरोपी विवेक कुमार उर्फ पव्वा को माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया और माननीय न्यायालय से 02 दिन का पीसी रिमांड हासिल किया गया। आरोपी धर्मेंद्र उर्फ कनिया निवासी अजीत विहार, बुराड़ी, दिल्ली को आरोपी विवेक कुमार उर्फ पव्वा की निशानदेही पर गिरफ्तार किया गया और कथित साहिल की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की गई। हालांकि, वह फरार है। आरोपी चोरी के वाहनों की नंबर प्लेट बदल देते थे। आरोपियों की निशानदेही पर 04 चोरी के दोपहिया वाहन बरामद किए गए हैं। इसके अलावा, चोरी के वाहनों के रिसीवर और कथित साहिल का पता लगाने के लिए निरंतर पूछताछ जारी है। आरोपियों का प्रोफाइल:- - 1. विवेक कुमार उर्फ पव्वा निवासी बाबा मोहन राम कॉलोनी, मुकुंदपुर, दिल्ली उम्र 23 वर्ष (आरोपियों की पिछली संलिप्तता - 9)। 2. धर्मेंद्र उर्फ कनिया निवासी अजीत विहार, बुराड़ी, दिल्ली उम्र 35 वर्ष (आरोपियों की पिछली संलिप्तता - 31)। मुकदमे निपटाए गए:- - 1. एफआईआर संख्या 162/25, दिनांक 24.03.2025, धारा 25 आर्म्स एक्ट और 317(2) बीएनएस, पीएस जगतपुरी। 2. ई-एफआईआर संख्या 22233/2024, दिनांक 28.07.2024, धारा 305(बी) बीएनएस, पीएस जगतपुरी। 3. ई-एफआईआर संख्या 7194/25, दिनांक 09.03.2025, धारा 305(बी) बीएनएस, पीएस गांधी नगर। 4. ई-एफआईआर संख्या 4691/2025, दिनांक 15.02.2025, धारा 305(बी) बीएनएस, पीएस बुराड़ी। 5. ई-एफआईआर संख्या 4321/2025, दिनांक 12.02.2025, धारा 305(बी) बीएनएस, पीएस भलस्वा डेयरी। 6. ई-एफआईआर संख्या 1436/2025, दिनांक 15.01.2025, धारा 305(बी) बीएनएस, पीएस जगतपुरी। बरामदगी:- - 1. एफआईआर संख्या 162/25, दिनांक 24.03.2025, धारा 25 आर्म्स एक्ट और 317(2) बीएनएस, पीएस जगतपुरी में एक फ्लिक चाकू। 2. हीरो सुपर स्प्लेंडर जो केस ई-एफआईआर संख्या 22233/2024, दिनांक 28.07.2024, धारा 305(बी) बीएनएस, पीएस जगतपुरी में चोरी हो गई थी। 3. होंडा एक्टिवा जो केस ई-एफआईआर संख्या 7194/25, दिनांक 09.03.2025, धारा 305(बी) बीएनएस, पीएस गांधी नगर में चोरी हो गई थी। 4. टीवीएस जुपिटर जो केस ई-एफआईआर संख्या 4691/2025, दिनांक 15.02.2025, यू/एस 305(बी) बीएनएस, पीएस बुराड़ी में चोरी हो गई थी। 5. हीरो स्प्लेंडर प्लस जो केस ई-एफआईआर संख्या 4321/2025, दिनांक 12.02.2025, यू/एस 305(बी) बीएनएस, पीएस भलस्वा डेयरी में चोरी हो गई थी। 6. होंडा शाइन जो केस ई-एफआईआर संख्या 1436/2025, दिनांक 15.01.2025, यू/एस 305(बी) बीएनएस, पीएस जगतपुरी में चोरी हो गई थी। टीम:- 1. एएसआई सुभाष 2. एएसआई अभिमन्यु 3. एचसी विवेकबाना (आईओ) 4. एचसी संदीप 5. एचसी राजेश 6. एचसी आसमीन।

थाना कोटला मुबारकपुर, दक्षिण जिले के पुलिस कर्मियों द्वारा मोबाइल फोन, नकदी और ईयरबड लुटेरे गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

नई दिल्ली। दिनांक 25.03.2025 पुलिस थाना कोटला मुबारकपुर, दक्षिण जिले के कर्मचारियों ने कुछ ही घंटों में डकैती का मामला सुलझाकर और एफआईआर संख्या 123/2025 दिनांक 23.03.2025 के तहत धारा 309(4)/3(5) बीएनएस थाना केएम पुर के मामले में 04 सीसीएल को गिरफ्तार करके सराहनीय कार्य किया है। उनकी निशानदेही पर लूटा गया 01 मोबाइल फोन, 1300/- रुपये नकद और 01 ईयरबड बरामद किए गए। घटना के संक्षिप्त तथ्य:- दिनांक 23.03.2025 को शिकायतकर्ता निवासी पिलांजी गांव, कोटला मुबारकपुर, दिल्ली, उम्र 20 वर्ष ने थाना के.एम.पुर में रिपोर्ट दर्ज कराई कि दिनांक 22.03.2025 को रात्रि करीब 10:30 बजे जब वह घर जा रहा था और एम्स राउंड अबाउट के पास फ्लाईओवर के नीचे पहुंचा तो अचानक 04 व्यक्ति आए और उसकी जेब से मोबाइल फोन, ईयरबड, नकद ?1200-1300 लूटकर भाग गए। शिकायतकर्ता के बयान पर थाना के.एम.पुर में एफआईआर संख्या 123/2025 दिनांक 23.03.2025 धारा 309(4)/3(5) बी.एन.एस. के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। टीम, सूचना और कार्रवाई:- मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए, श्री राजेंद्र सिंह, एसीपी/डिफेंस कॉलोनी की समग्र देखरेख में एसएचओ/के.एम.पुर के नेतृत्व में एसआई योगेश कुमार, एएसआई राजेंद्र, एचसी दातार, एचसी संदीप, एचसी मुकेश की एक टीम का गठन किया गया, जो तेजी से कार्रवाई करने के लिए गठित की गई। जांच के दौरान, टीम ने अपराध स्थल के आसपास के इलाकों में लगे कैमरों की सीसीटीवी फुटेज एकत्र की और अपराधियों के बारे में कोई सुराग पाने के लिए संक्षेप में/सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया। घटना और कथित व्यक्तियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए शिकायतकर्ता से पूछताछ की गई। पीड़ित को संदिग्ध की तस्वीरें भी दिखाई गई, ताकि उसकी शारीरिक बनावट, हेयर स्टाइल, शारीरिक बनावट और रंग आदि की पहचान की जा सके। टीम ने तकनीकी स्रोतों के माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण इनपुट एकत्र किए और महत्वपूर्ण इनपुट को शुद्ध किया और मैन्युअल और तकनीकी निगरानी के माध्यम से कुछ और महत्वपूर्ण इनपुट निकाले। सीसीटीवी फुटेज के विश्लेषण से टीम 04 कथित व्यक्तियों की तस्वीरें विकसित करने में कामयाब रही। उनकी पहचान करने के लिए उनकी तस्वीरें पुलिस नेट पर प्रसारित की गई। जेल/जमानत से रिहा हुए अपराधियों की सूची तथा इस प्रकार की आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त बी.सी., नवोदित अपराधियों की डोजियर प्राप्त की गई तथा उनकी जांच की गई। टीम ने मामले के सभी उपलब्ध पहलुओं पर काम किया। स्थानीय स्रोतों की मदद ली गई तथा मानव खुफिया जानकारी एकत्रित की गई। टीम की लगन तथा प्रयासों का परिणाम तब सामने आया जब 04 कथित व्यक्तियों की पहचान सी.सी.एल. के रूप में की गई। निगरानी तथा तकनीकी विश्लेषण के माध्यम से उन्हें गिरफ्तार किया गया। उनकी निशानदेही पर 01 लूटा हुआ मोबाइल फोन, नकद 1300/- रुपये तथा 01 ईयरबड बरामद किए गए। 04 सी.सी.एल. गिरफ्तार किए गए। बरामदगी:-1. लूटा हुआ मोबाइल फोन, नकद 1300/- रुपये तथा ईयरबड। मामला निपटाया गया:- एफआईआर संख्या 123/2025, दिनांक-23.03.2025, धारा-309(4)/3(5) बी.एन.एस., थाना कोटला मुबारकपुर। अच्छे काम में शामिल कर्मचारियों को उचित पुरस्कार दिया जा रहा है।

असम श्रीभूमि जिले के चेरागी किशोरीपुर में राताबाड़ी उन्नयन संस्था द्वारा सम्मेलन धूमधाम से आयोजित किया गया

स्वतंत्र प्रभात

असम श्रीभूमि (करीमगंज)। असम श्रीभूमि जिले के रामकृष्णनगर विधान सभा के अंतर्गत चेरागी के समीप किशोरीपुर में राताबाड़ी नमःशूद्र विकास संगठन की और से उन्नयन संस्था की दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया. 22, मार्च (शनिवार) को पतका का उत्तोलन के माध्यम से दो दिवसीय सम्मेलन का शुभारंभ किया गया. इसमें बराक घाटी के विभिन्न क्षेत्रों से उक्त समुदाय के सहस्त्रधित लोग के साथ 23 मार्च (रविवार) को गोपीकांत विश्वास के नेतृत्व में आयोजित सभा की शुरुआत में समाज सुधारकों बीआर अंबेडकर, हरिचंद ठाकुर और गुरूचंद ठाकुर के प्रति दीप जलाकर पुष्प निवेदन कर नमन किया सभी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। उद्घाटन संगीत का प्रदर्शन ऊषा रानी विश्वास और सह कलाकारों ने किया। स्वागत भाषण मातिलाल राय ने दिया। इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों से आए समाजसेवी, शिक्षाविद, वकील और विशिष्ट लोगों को सम्मान सहित गमछा से स्वागत किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीभूमि जिले के असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ कस्टम्स एस बी सुलंकी ने कहा कि हम सभी को एकता बनाए रखने की जरूरत समाज में तब जाकर और भी आगे बढ़ेगा. और विशिष्ट वकील सुरची राय ने अपनी बातों में कहा कि वर्तमान नमःशूद्र समुदाय आर्थिक और शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पीछे है। यहां तक कि राजनीतिक दृष्टि से भी पीछे रखा गया है इसलिए सभी को आर्थिक और सामाजिक में नमःशूद्रों संगठन को एकजुट होने की अपील की। इसलिए इस बार पंचायत, राज्य और केंद्र में अनुसूचित समुदाय के उम्मीदवार देने की मांग की गई। सभा में राताबाड़ी उन्नयन संस्था द्वारा मांगों में 10 सूत्री मांगों के साथ शामिल था 1) खास और वन आरक्षित भूमि पर रहने वाले नमःशूद्र समुदाय के लोगों को पट्टा देने की व्यवस्था करना। 2) नमःशूद्र समुदाय के निवास के साथ क्षेत्र में सड़क निर्माण करके संवाद की सुविधा प्रदान की। 3) राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक दृष्टि से पिछड़े नमःशूद्र समुदाय को प्राथमिकता आधारित राजनीतिक गतिविधियों में उनका प्रतिनिधित्व करने के अवसर या व्यवस्था देने के लिए सरकारी स्कूल, कॉलेज स्थापित करने की मांग की गई। 4) नमःशूद्र समुदाय के जनसंख्या क्षेत्र में महिलाओं के लिए सरकारी स्कूल, कॉलेज स्थापित करने का दावा किया गया है। 5) श्रीभूमि जिले में नमःशूद्र छात्रों के लिए छात्रावास देने के लिए रामकृष्णनगर क्षेत्र में काला चूप क्षेत्र में होस्टेल की व्यवस्था की जाए। 6) रामकृष्णनगर विधानसभा क्षेत्र में मथुरा बाजार में सिंगला नदी पर पुल निर्माण और दुर्गापुर तक सड़क निर्माण की व्यवस्था करने की मांग की गई है। 7) अन्य समुदायों को सरकार द्वारा विकास परिषद स्थापित कर सरकारी मान्यता प्राप्त करने के तरीके से, असम में निवास करने वाले सभी नमःशूद्र समाज के सर्वांगीण कल्याण के लिए नमःशूद्र विकास परिषद का गठन कर सरकारी मान्यता प्राप्त की जाए, इस मांग को विधानसभा और राज्य सभा में रखा जाए। 8) आगामी पंचायत चुनाव में नमःशूद्र समुदाय के लोगों को प्रतिनिधित्व देने की अग्रणी भूमिका निभानी होगी। 9) नमःशूद्र जनसंख्या क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा और पीने के पानी की व्यवस्था करने की मांग की गई है। 10) अनुसूचित जातियों के विभिन्न समुदायों जैसे पाठनी, कायवत, रवीदास, शुक्लवेद, मालाकार आदि समुदायों के साथ समन्वय स्थापित करने के लिए समाज विकास संस्था अग्रणी भूमिका निभाएगी। विभिन्न विभिन्न प्रांतों से उपस्थित होने वाले विशिष्ट जन हैं अध्यक्ष गोपिकांत विश्वास, उपाध्यक्ष नीरेंद्र नमःशूद्र, सामान्य सचिव मतीलाल राय, श्रीभूमि जिले के सलाहकार और समाजसेवी अमरेश राय, समाज चिंतक और अधिवक्ता देवज्योति राय, समाजसेवी शिक्षाविद शीतेंद्र राय, राजकुमार राय, नयनमणि राय, समाजसेवी बाबुल राय और निर्मल राय, चेरागी जीपी एपी सदस्य वीरेंद्र नमःशूद्र, रण प्रसाद राय, प्रताप नमःशूद्र, पुलिंद्र नमःशूद्र, चेरागी महिला समाज और पूर्व एपी सदस्य उषा रानी विश्वास, नीलमणि राय, देवब्रत विश्वास सहित नमःशूद्र समाज के अन्य विशिष्ट व्यक्तित्व हैं। वे नव पीढ़ी के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने की अपील करते हैं। इस दिन स्थानीय महिलाएं और बच्चे धूमधाम से धामाइल नृत्य प्रदर्शन किया गया।

योगी सरकार के 8 साल पूरे... सरकार की गिनाई उपलब्धियां

स्वतंत्र प्रभात

पिहानी (हरदोई)। योगी सरकार के 8 वर्ष पूरे होने पर यूपी बीजेपी उत्सव मना रही है, जिसकी शुरुआत सोमवार से हो गई है। यह उत्सव 14 अप्रैल तक मनाया जाएगा। इसके तहत पार्टी कस्बे में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से सरकार की तमाम उपलब्धियों के साथ जनसंवाद करेगी। इसी क्रम में नगर पालिका परिषद की पिहानी में सेवा सुरक्षा सुशासन के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर विधायक श्याम प्रकाश के पुत्र रवि प्रकाश ब्लॉक प्रमुख तड़ियावां व पिहानी ब्लाक प्रमुख कुशी बाजपेई मौजूद रहे। अतिथियों का स्वागत अधिशासी अधिकारी अमित कुमार सिंह वरिष्ठ लिपिक गोपाल अवस्थी ,अश्विनी बाजपेई ,अरुण अग्निहोत्री, अमित जोशी ने पुष्प गुच्छ भेंट कर किया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रवि प्रकाश ने कहा कि सरकार की %सेवा, सुरक्षा और सुशासन नीति% पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री जारी की।?हमारी डबल इंजन की सरकार में युवाओं, महिलाओं के लिए काम हुआ है। जनता ने 8 सालों में भरपूर समर्थन दिया है। बेटियां, व्यापारी पहले सुरक्षित नहीं थे लेकिन अब सुरक्षा की गारंटी है। रवि प्रकाश ने कहा कि पूर्व की सरकारों में लोगों ने दंगे, आतंक कोदेखा. 8 वर्ष पहले उत्तर प्रदेश बीमारू राज्य माना जाता था, लेकिन आज वही प्रदेश अर्थ शक्ति के रूप में उभरा है। पहले यूपी को विकास का ब्रेक माना जाता था, पर आज वही यूपी विकास का उदाहरण बनकर उभरा है. उन्होंने कहा कि प्रदेश वही है, जनता वही है, सिस्टम वही है, सिर्फ सरकार बदलने मात्र से बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। ब्लॉक प्रमुख पिहानी कुशी बाजपेई ने कहा कि हममें से ज्यादातर लोग जानते हैं कि 8 साल पहले यूपी की स्थिति और पहचान क्या थी। 8 साल पहले यूपी के इंफ्रास्ट्रक्चर और अर्थव्यवस्था की हालत छिपी नहीं थी। यूपी के सामने पहचान का संकट था, किसान आत्महत्या कर रहे थे, युवा संघर्ष कर रहे थे, बेटियां और व्यापारी असुरक्षित थे और दंगों और ध्वस्त कानून व्यवस्था की वजह से लोग खराब अर्थव्यवस्था को बर्दाश्त कर रहे थे... राज्य और मशीनरी आज भी वही हैं, लेकिन हम देख सकते हैं कि कैसे सरकार बदलने से बड़े बदलाव हो सकते है। कार्यक्रम में विद्यालय के बच्चों की ओर से स्टाल भी लगाए गए थे। कार्यक्रम का संचालन भाजपा के पूर्व नगर अध्यक्ष आदर्श सिंह व महामंत्री नीरज सिंह ने किया। विधायक पत्रिका धर्मेश मिश्रा भाजपा नगर अध्यक्ष गौरव गुप्ता सभासद , सभासद प्रतिनिधि अरुण गुप्ता, रामदास कटियार ,कस्तूरबा गांधी विद्यालय के गरिमा वाजपेई, सागर पांडे, पिंटू मिश्रा आज लोग मौजूद रहे।

अंतराज्यीय बच्चा चोर गिरोह की दो और शातिर महिलाओं को पुलिस ने किया गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

हरदोईअतरौली। थाना क्षेत्र के ग्राम गौरीकला एक वैवाहिक समारोह से 3 वर्षीय बालक के लापता होने के बाद हरदोई पुलिस ने छानबीन में प्रकाश में एक अंतर्राजीय बच्चा चोर गिरोह का पर्दाफाश करते हुए बच्चे की बरामदगी कर गिरोह के पांच लोगों को जेल भेजने के बाद गिरोह की दो शातिर सक्रिय महिलाओं को गिरफतार कर जेल भेज दिया है। पुलिस ने सीतापुर से 10 फरवरी को चोरी किया गया बच्चा भी बरामद कर उसके परिजनों को सौंप दिया है।प्राप्त विवरण में 21 फरवरी को अतरौली थाना क्षेत्र से 3 वर्षीय बालक के लापता होने की सूचना पर पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन द्वारा जनपद में अपहृत / गुमशुदा बच्चों/बालकों की सकुशल बरामदगी हेतु चलाये जा रहे अभियान ÷ऑपरेशन स्माईल÷ के क्रम में गठित पुलिस टीम द्वारा साक्ष्य संकलन व मोबाइल सर्विलांस की मदद से अथक प्रयास किया जा रहा था। अपहृत बच्चे रितिक के संबंध में सर्विलांस के माध्यम से अभय वर्मा व उमाशंकर की संदिग्धता प्रतीत हुई जिसपर इनसे पूछताछ की गयी।आरोपियों द्वारा बताया गया कि जनपद हरदोई थाना क्षेत्र अतरौली व जनपद सीतापुर से 02 बच्चों सहित कुल 03 बच्चों को (एक थाना अटरिया मे शादी समारोह में से आर्यन उम्र करीब 03 वर्ष को 10.02.2025 को व थाना बिसवां से कार्तिक मौर्या उम्र 03 वर्ष को मेले से 27.12.2024 को चोरी किये गये थे) चोरी कर के दिल्ली में रह रही महिला सोनिया को दे देते थे। सोनिया नाम की महिला से भी पूछताछ व जानकारी की गयी तो बताया कि हरदोई वाले बच्चे को तेलंगाना शारदा के माध्यम बेचने हेतु भेजा है। उक्त बताये अनुसार एक टीम 14.03.2025 को तेलंगाना रवाना किया गया था।सोनिया द्वारा चोरी किये गये तीनों बच्चों को जिसमें हरदोई के बच्चे को शारदा के माध्यम से तेलंगाना में अज्ञात व्यक्ति को बेचा गया तथा सीतापुर के 02 बच्चे जिसमें से एक को राजमुंद्री व एक को विजयवाडा में बेचा गया है। पुलिस टीम द्वारा थाना अतरौली जनपद हरदोई पर पंजीकृत मु0अ0सं0 52/25 धारा 137(1) बीएनएस से संबंधित गुमशुदा 03 वर्षीय बच्चे रीतिक को सकुशल बरामद कर 19.03.2025 को तथा 10.02.2025 को थाना अटरिया जनपद सीतापुर क्षेत्रांतर्गत शादी समारोह से चोरी हुए 03 वर्षीय बच्चे आर्यन को सकुशल बरामद कर नियमानुसार परिजनों को सुपुर्द किया जा चुका है। पुलिस टीम द्वारा बच्चे चोरी करने की घटना में संलिप्त गिरोह की सक्रिय मोडावती शारदा पत्नी मोडावती राजू निवासी राज राजेश्वर पेडा, सिंहनगर जनपद विजयवाडा आन्ध्र प्रदेश और सविता ठाकुर पत्नी सोनू ठाकुर निवासी राऊरकेला छेड ढमरा बस्ती जनपद सुन्दरगढ थाना छेड उडीसा (वर्तमान पता सेक्टर 21 थाना डुडेरा के पास जिला गुडगाव राज्य हरियाणा) को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ का विवरण-पुलिस टीम द्वारा पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि गिरफ्तार अभियुक्तगणों का बच्चा चोरी करने का एक अंतर्राजीय सक्रिय गिरोह है जिसमें कई महिलाएं भी शामिल है।बच्चे चुराने के उपरांत बच्चों के फोटों सोनिया उर्फ सुनीता को भेज दी जाती थी। जिसके आधार पर बच्चों के रंग रुप अनुसार बच्चे की कीमत तय की जाती थी। पूर्व में गिरफ्तार सोनिया उर्फ सुनीता के बताने के अनुसार दोनों अभियुक्तों द्वारा बच्चे को दिल्ली पहुंचा दिया जाता था। अभियुक्ता सोनिया उर्फ सुनीता द्वारा बच्चे को दिल्ली में तैयार कराकर विजयवाडा में मौजूद सविता, शारदा, मुमताज व बिजली को फोटों भेजती थी। गिरफ्तार अभियुक्ता सविता व शारदा पूर्व में गिरफ्तार अभियुक्ता सोनिया उर्फ सुनीता से रुपये लेकर चोरी किये गये बच्चो को विभिन्न राज्यों में भेजती थी।पुलिस टीम द्वारा बच्चे चोरी करने की घटना में संलिप्त गिरोह के अभय वर्मा उमाशंकर,सोनिया उर्फ सुनीता,पठान मुमताज उर्फ हसीना और बिक्कोल बिजली को पूर्व में गिरफ्तार कर न्यायालय अभिरक्षा में भेजा जा चुका है।